THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180013
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83.1 S61G Accession No. G.H.2630

Author सिंह, आनन्द प्रकाश

Title जर्मनी की कहानी 1960.

This book should be returned on or before the date last marked below.

जर्मनी की कहानी

सम्पादक

मोहन

जर्मनी की कहानी

आनन्द प्रकाश सिंह

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
बम्बई १

प्रथम संस्करण : १९६०

© बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, १९६०

प्रकाशक : मोहन पंजाबी, बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, निकल रोड, बम्बई १
मुद्रक : वि. पु. भागवत, मौज प्रिंटिंग ब्यूरो, खटाऊ मकानजी वाडी, बम्बई ४

विषय-सूची

१.	समुद्र की लहरों पर	७
२.	ब्रेमन का बन्दरगाह	१८
३.	हैनोवर से बर्लिन	२३
४.	बर्लिन की गलियों में	३३
५.	घर घर की बात	४३
६.	बर्लिन से बिदाई	४९
७.	अंगूरों के बाग़ीचे	५७
८.	जर्मनी का प्रयागराज	६७
९.	मुस्कराती वादियाँ	७५
१०.	संस्कृति के रखवाले	८१
११.	खंडहरों की दुनिया	८२
१२.	सांस्कृतिक नगर : म्यूनिक	९४
१३.	कर्मठ लोगों के देश, तुझे आख़री सलाम	९९

जर्मनी दर्शन का मार्ग

१

समुद्र की लहरों पर

"विनोद, देखो हेम्बर्ग का बन्दरगाह दिखाई देने लगा है।" हंसा लाइन के जहाज़ में यात्रा कर रहे एक व्यक्ति ने अपने से कुछ दूर पर बैठे हुए चौदह-पंद्रह वर्ष के एक किशोर की ओर देख कर कहा।

किन्तु विनोद अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसे चाचा की बात सुनाई नहीं दी। उसे वह दिन याद आ रहा था, जिस दिन शाम को दफ्तर से घर लौटने पर उसके चाचाजी ने बताया था कि शायद उन्हें कुछ दिनों के लिए जर्मनी जाना पड़े। इससे पहले भी व्यापार के सिलसिले में वे कई बार जर्मनी जा चुके थे। वहाँ से लौटने पर हर बार वे उस देश के मेहनती लोगों, विचित्र दृश्यों और संसार प्रसिद्ध कल-कारख़ानों के बारे में ऐसी बातें बताया करते थे कि उसके मन में जर्मनी देखने की लालसा जाग उठी थी। वह अवसर की ताक में था और भाग्य से उन्हें रुपए पैसे की कमी न थी और गर्मी की छुट्टियों में स्कूल भी बन्द

हो चुका था। उचित अवसर जानकर उसने चाचाजी से आग्रह-भरे शब्दों में कहा था "चाचाजी मुझे भी अपने साथ जर्मनी ले चलिए न ? आपने मुझे बहुत पहले से वचन दिया हुआ है।" उसके चाचा ने कहा था, "यदि घर में सबकी राय हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।" पहले तो विनोद को अपनी माँ को राजी करने में कुछ परेशानी हुई। उनका कहना था कि इतनी छोटी उम्र में विदेश जाकर वह क्या समझ सकेगा, क्या सीख सकेगा। किन्तु जब सबने एक आवाज़ में कहा कि सीखने-समझने की यही उम्र है और ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते, तब उन्होंने उसका जाना स्वीकार कर लिया था। किस उत्साह से उसने विदेश-यात्रा पर जाने का समाचार अपने सहपाठियों और साथियों को सुनाया था और किस तरह सबने उसके भाग्य को सराहा था। फिर तो उमंग से उसने यात्रा की तैयारी शुरू की, नए नए कपड़े सिलवाये और कई तरह के टीके लगवाये। और अन्त में वह दिन भी आ पहुँचा जब वह अपने चाचाजी के साथ बम्बई के बैलार्ड पियर बन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ से उसे पी. एण्ड ओ. कम्पनी के जहाज़ में यात्रा करनी थी। बन्दरगाह पर उसकी माँ, भाई-बहन, सगे-सम्बन्धी और मित्र सभी उन्हें पहुँचाने आये थे। जब जहाज़ चला तो, उसे याद आया कि किस तरह उसकी आँखों में आँसू छलछला आये थे। वह अपने देश और सगे-सम्बन्धियों से विदा जो ले रहा था, भले ही वह विदा कुछ ही दिनों के लिए क्यों न रही हो।

जहाज़ रवाना होने से लेकर आज तक की १५ दिन की यात्रा तेज़ी से उसकी आँखों के सामने तस्वीर की तरह घूम गई। बम्बई से जब वह चला तो उसे कितना अजीब लग रहा था। चारों ओर पानी ही पानी और नीला आकाश, इनके अलावा कहीं कुछ न था। लगभग १४ दिन की यात्रा के बाद जहाज़ अदन, पोर्ट सैयद और जिब्राल्टर के बन्दरगाहों पर होता हुआ इंग्लैण्ड पहुँचा था और वहाँ से उन्होंने एक जर्मन कम्पनी—हंसा लाइन के जहाज़ में यात्रा शुरू की थी। पूरा रास्ता उसने चाचाजी से बातें करने और पुस्तकें पढ़ने में बिताया। किन्तु रोज़-रोज़ वही दृश्य, वही कार्यक्रम रहने से वह कुछ-कुछ ऊब सा गया था और उसे आलस्य ने आ घेरा था। आख़िर वह बम्बई से लेकर आज तक की यात्रा के बारे में सोच-विचार करने में लीन हो गया।

"विनोद, देखो हैम्बर्ग (Hamburg) बन्दरगाह साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा है।" चाचाजी ने उसके पास आकर उसका कन्धा छूकर कहा।

"क्या, आं...." मानों वह चौंक पड़ा।

"हमारा जहाज़ अब थोड़ी देर में हैम्बर्ग बन्दरगाह में प्रवेश करने वाला है।" चाचाजी ने पुनः कहा "जर्मनी के सबसे बड़े बन्दरगाह में हम पहुँच गये।"

"हैम्बर्ग आ गया!" विनोद सजग होकर बोल उठा। सम्भलते ही उसका मन उत्साह और उमंग से भर उठा। उसका सपना, जर्मनी देखने का सपना—आज पूरा होने जा रहा था। अंगड़ाई

लेकर वह उठ खड़ा हुआ और बाहर की ओर झांकने लगा।

जहाज़ बन्दरगाह में प्रवेश कर रहा था। बन्दरगाह के इर्द-गिर्द बड़ी-बड़ी इमारतें दिखाई दे रही थीं। लगता था मानों वह अपने बम्बई में ही हो। उसे लगा कि दुनिया के बड़े-बड़े बन्दरगाहों में बहुत कुछ समानता होती है। चुंगी के अधिकारियों से छुट्टी पाकर बन्दरगाह से बाहर निकल विनोद और उसके चाचा एक होटल में पहुँचे। रास्ते में विनोद ने देखा कि हैम्बर्ग की सड़कें लम्बी-चौड़ी और साफ-सुथरी हैं। लोगों की वेश-भूषा भी अंग्रेजों जैसी ही है। होटल में अपने कमरे में पहुँचते ही उसने एक बैरे को पास बुला कर अंग्रेज़ी में पानी लाने को कहा, किन्तु उसे डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि बैरा अंग्रेज़ी ज़बान न समझता हो। चाचाजी उसके मन का भाव ताड़ गये और बोले, "हैम्बर्ग अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह है। यहाँ प्रायः सभी लोग कामचलाऊ अंग्रेज़ी समझ-बोल लेते हैं। उसके बग़ैर गुज़ारा नहीं।" और जब कुछ मिनिट पश्चात् ही बैरा पानी का गिलास लेकर हाज़िर हुआ तो विनोद को उनकी बात पर यक़ीन आ गया।

नहा-धोकर भोजन करके कुछ देर तक आराम कर लेने के बाद, चाचा-भतीजे शहर देखने निकले। किसी गाइड की उन्हें ज़रूरत ही न थी क्योंकि विनोद के चाचा कई बार हैम्बर्ग आ चुके थे। विनोद को अब तक कई जर्मनों के साथ बातचीत का मौक़ा मिल चुका था। उसने जर्मनों को मिलनसार पाया। जिस किसी से वह बात करता, वह उसका जवाब नम्रता से देता। बम्बई की

ही तरह यहाँ भी उसने सड़कों पर खूब चहल-पहल देखी और साथ ही लोगों को भाग-दौड़ में लगा देखा, मानों किसी को बात करने की फ़ुर्सत ही न हो। उसने अपने चाचाजी से पूछा "चाचाजी, बम्बई में जब कभी हमारे कोई रिश्तेदार उत्तर भारत से आकर ठहरा करते हैं तो उनकी एक आम शिकायत होती है। वह यह कि बम्बई के लोग भाग-दौड़ में लगे रहते हैं, किसी को किसी से बात करने की फ़ुर्सत ही नहीं। कुछ ऐसी ही बात यहाँ भी दिखलाई देती है। कहते हैं कि जर्मन लोग बड़े मेहनती होते हैं, आलस से दूर रहते हैं। क्या यहाँ के सभी शहरों के निवासियों का यही हाल है?"

चाचाजी ने उसकी बात सुनी और हँस कर उत्तर दिया, "तुमने एक बुद्धिमानी का सवाल किया है विनोद! बम्बई की ही तरह हैम्बर्ग भी बन्दरगाह और व्यापार का केन्द्र है। यही कारण है कि लोग फ़ुर्सत में कम दिखाई देते हैं।"

चाचाजी ने विनोद को पहले ही बतला दिया था कि भ्रमणार्थियों के लिए पश्चिमी जर्मनी स्वर्ग के समान है। कहावत है कि यहाँ कोई भी मौसम हो, वह भ्रमणार्थियों के लिए अनुकूल ही साबित होगा। यहाँ के लोगों के आर्थिक जीवन का विकास होने के साथ और भी चीजों का विकास हुआ है, जिसे देख कर खुशी होती है। सैर-सपाटे के लिए यातायात के ऐसे सुविधाजनक साधन बहुत कम देशों में देखने को मिलेंगे। ट्रेनों, बसों, स्टीमरों, मोटर-बोटों सभी में यात्रियों के लिए भरसक सुविधाएँ दी गई हैं। यहाँ का

वसन्त मार्च में शुरू हो जाता है जबकि राइन (Rhine) की निचली भूमि में पेड़ों और पौधों में कलियाँ आ जाती हैं। कुछ ही हफ़्तों के भीतर आल्प्स (Alps) के उत्तर की ओर का समूचा भाग एक हरा-भरा बग़ीचा नज़र आने लगता है। ग्रीष्म में पतझड़ आ जाने पर जर्मन वनों की सुन्दरता देखते ही बनती है। अक्तूबर से नवम्बर तक तो बर्फ़ पर खेलकूद का मौसम रहता ही है। हमारे देश के लोगों के समान जर्मन लोग भी अतिथि-सत्कार करने के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ के हर एक नगर, क़स्बे और छोटे गाँव तक में बहुत कम भाड़े पर साफ़-सुन्दर कमरे रहने के लिए मिल जाया करते हैं।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर दोनों को एक बहुत बड़ा चर्च दिखलाई दिया। विनोद को ध्यान आया कि बन्दरगाह में प्रवेश करने से पहले उसने इसी चर्च की झलक देखी थी। अब वे चर्च के और क़रीब आ गये। वाह, क्या विशाल चर्च है। और इस पर की गई नक़्क़ाशी का तो कोई जवाब ही नहीं। विनोद बोला "यह तो बहुत बड़ा और भव्य चर्च मालूम होता है चाचाजी। दूसरे चर्चों से कहीं अधिक लोग यहाँ दिखलाई देते हैं।"

"तुम्हारा कहना सही है, यह यहाँ का नामी मिशाएलिस (Michaelis) चर्च है। इसे नाविकों का चर्च भी कहते हैं।"

"नाविकों का चर्च! यह क्यों? ऐसा नाम तो मैंने किसी चर्च के लिए नहीं सुना।"

"यही तो बात है! जानते ही हो हैम्बर्ग बड़ा बन्दरगाह है

जहाज़ यहाँ से दुनिया के कोने-कोने में जाते हैं और उनके साथ अनेक नाविक होते हैं। आज से कुछ वर्ष पहले समुद्र-यात्रा इतनी सुरक्षित नहीं थी।"

"हाँ, मैंने कई पुस्तकों में पढ़ा है कि कितने ही जहाज़ तूफ़ान की चपेट में आ जाते थे, या किसी समुद्री चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाते थे और उनमें यात्रा करने वाले यात्री और नाविक जान से हाथ धो बैठते थे।"

"बिल्कुल यही बात थी। जहाज़ के कर्मचारियों को जान हथेली पर रख कर यात्रा करनी पड़ती थी। इसके लिए जहाज़ रवाना होने से पहले वे अपने अपने धर्म के अनुसार चर्च, मस्जिद या मन्दिर में जाकर प्रार्थना किया करते थे। कुछ लोग भले-चंगे वापस लौट आने के लिए मन्नतें भी मांगा करते थे।"

"ऐसा तो हमारे देश में भी होता है।"

"हाँ, आख़िर इंसान की दिली भावना तो दुनिया भर में एक होती है—चाहे वह कोई भी ज़बान क्यों न बोले। तो मेरे कहने का मतलब यह था की हैम्बर्ग से रवाना होनेवाले जहाज़ों के कर्मचारी यहाँ आकर कुशलपूर्वक-यात्रा के लिए प्रार्थना किया करते हैं। बहुत से जहाज़ के लौट आने पर भी वैसा करते हैं।"

"अब भी? अब तो यात्रा पहले जैसी ख़तरनाक नहीं रही।"

"हाँ, वह रिवाज अब तक चला आ रहा है। सभी साहस भरे कामों में भाग लेने वाले लोग ऐसे रिवाजों को बहुत मानते हैं। इससे उनमें आत्म-विश्वास पैदा हो जाता है।"

"मै समझ गया। आपने बताया था कि जब कोई भी जहाज़ एक ख़ास रेखा को पार करता है तो उसके कर्मचारी समुद्र के देवता वरुण की पूजा करते हैं और उन्हें धन्यवाद देते हैं।"

"तुम्हारी याद्दाश्त अच्छी है, आओ अब आगे बढ़े।"

चाचाजी विनोद को लेकर एक बड़े फाटक के सामने जाकर खड़े हो गये, जो ज़मीन पर बना हुआ था। विनोद को कुछ अचरज हुआ क्योंकि ज़मीन के ऊपर कोई इमारत नहीं थी। आख़िर जब वे अन्दर प्रविष्ट हुए तो उसे पता चला कि वह तो एक बड़ी सुरंग है जो शहर को उत्तरी टापू से जोड़ती है। इस सुरंग से होकर लोग इस तरह मज़े में आ-जा रहे थे, मानों किसी बड़ी सड़क पर ही चल रहे हों। सुरंग के दूसरे किनारे पर पहुँचकर उसने देखा कि वे लोग अन्दर ही अन्दर बहुत दूर निकल आये हैं। चाचाजी ने बन्दरगाह का चक्कर काटने के लिए एक नाव किराये पर ली क्योंकि वे जानते थे कि विनोद को नौका-विहार बहुत पसन्द है और इस बन्दरगाह में चक्कर काटते समय विनोद को लगा मानों वह अपने बम्बई के बन्दरगाह में ही चक्कर काट रहा। सच है, दुनिया में इतना फ़र्क़ होते हुए भी कितनी समानता है!

नौका की सैर करके वे आगे बढ़े। अब चाचाजी उसे अल्स्टर झील (Alster Lake) दिखने ले गये। वाह क्या झील है और शहर से बिलकुल मिली हुई! झील के किनारे बगीचे में बैठे हुए बहुत से लोग प्रकृति की मनोरम सुन्दरता

का आनन्द ले रहे थे। वे दोनों भी कुछ देर वहीं बैठे रहे। लौटते समय चाचाजी ने बताया कि तरह तरह की नुमाइशें और मेले जर्मनी के प्रायः हर शहर में लगते रहते हैं। हैम्बर्ग में ऐसा एक मेला फ़रवरी में लगता है जिसके अन्दर खाने-पीने की चीजें ही बेची जाती हैं।

कुछ ठहरकर विनोद के चाचाजी ने उससे कहा "आओ अब हम टाउन हाल को देखते हुए यहाँ का आर्ट-म्यूजियम, और फिर बोटेनिकल गार्डेन देखें। उसके बाद हागेनबेक चिड़ियाघर (Hagenbeck's zoo) और सेंट पोली एम्यूज़मेन्ट सेन्टर (मनोरंजन केन्द्र) देखने के बाद हम यहाँ के मुख्य-मुख्य दर्शनीय स्थान देख चुकेंगे।"

कई घंटों की सैर के बाद जब विनोद अपने चाचा के साथ होटल लौटा, तो बहुत खुश था। बोटेनिकल गार्डन—और एम्यूज़मेंट सेन्टर देखने के बाद उसकी तबीअत खुश हो गई थी। बाग का फ़व्वारा तो उसे बड़ा ही सुन्दर लगा। अब तक उसे यह भी भली-भांति पता चल चुका था कि उसकी यात्रा मनोरंजक होने के साथ साथ ज्ञानवर्द्धक भी होगी। उसके दिमाग पर यह छाप लग चुकी थी कि जर्मन लोग अधूरा काम करने में विश्वास नहीं रखते। बोटेनिकल गार्डन और एम्यूज़मेंट सेंटर इसके प्रमाण थे। हैम्बर्ग शहर को यद्यपि दूसरी लड़ाई में नष्ट सा कर दिया गया था, किन्तु जर्मनों ने उसको फिर से नये तरीक़े से खड़ा कर दिया है।

शहर में घूमते समय विनोद ने हैम्बर्ग में भी बम्बई की ही

तरह बिजली की ट्रेनों को दौड़ते देखा। जगह-जगह कल-कारख़ानों को खड़ा देखकर उसे पता चला कि हैम्बर्ग बड़ा बन्दरगाह ही नहीं, बड़ा औद्योगिक नगर भी है। यहाँ पर शराब, रसायन पदार्थ और मशीनों के कारख़ानों के अलावा तेल और चीनी को साफ़ करने के कारख़ाने भी हैं। बन्दरगाह होने के कारण जहाज़ों की मरम्मत का काम भी यहाँ किया जाता है। चाचाजी ने बतलाया कि उसके पास-पड़ोस के उपनगर जो आज नगर के भाग हैं, किसी ज़माने में अलग अलग छोटे-छोटे गाँव थे।

तीन-चार दिन बाद तड़के ही दोनों कार से उत्तर की ओर श्लेसविग होल्स्टाइन (Schleswig-Holstein) प्रान्त के लिए रवाना हुए। यही जर्मनी का एकमात्र प्रांत है जिसके पूर्व और पश्चिम में सागर तट है और जो बाल्टिक सागर के किनारे फैला हुआ है। यह प्रान्त डेन्मार्क से मिला हुआ है। रास्ते में दोनों को हरियाली ही हरियाली नज़र आई। सागरतट क़रीब होने से मछली मारना यहाँ के लोगों का मुख्य धंदा है। विनोद अनेक पशुओं और ख़ास कर गायों को मैदानों में चरते देख कर पूछ बैठा "चाचाजी, इस प्रदेश में तो बहुत गायें नज़र आ रही हैं। घी-दूध तो यहाँ खूब होता होगा।"

"हाँ, यही यहाँ के लोगों की जीविका का साधन है। यहाँ से मक्खन और दूध तथा मछलियाँ यूरोप के कई देशों को भेजी जाती हैं। स्कैन्डीनेविया के देशों के क़रीब होने के कारण यह उनकी कई ज़रूरतों को भी पूरा करता है।"

"तब तो इस प्रदेश में भी कोई न कोई बन्दरगाह ज़रूर होगा।"

"हाँ, इस प्रदेश का बन्दरगाह कील (Kiel) है जो इसकी राजधानी भी है। यह बन्दरगाह इसी नाम की खाड़ी में स्थित है। समय कम होने के कारण हम वहाँ तक नहीं चल सकेंगे। हैम्बर्ग से वह पूरा ७० मील पड़ता है।"

"कील की और क्या विशेषताएँ हैं, यह तो बतला ही दें चाचाजी।"

"ज़रूर! कील में सेंट निकोलस (St. Nicholas) चर्च, कला-संग्रहालय, बन्दरगाह और कील नहर देखने को मिलती है। पहली बड़ी लड़ाई के पहले कील जर्मनी के नौबेड़ों का केन्द्र था। यहाँ का महल १६ वीं सदी का बना हुआ है जबकि विश्वविद्यालय १७ वीं सदी में स्थापित हुआ था। यहाँ पर आटे की मिलें और छपाई के कारख़ाने भी हैं। सैर-सपाटे और सागरतट का आनन्द लेने के लिए सैलानी साल के हर महीने में यहाँ आया करते हैं। बन्दरगाह होने के कारण यह नगर लगभग हैम्बर्ग जैसा ही है, यद्यपि आबादी में उससे काफ़ी छोटा है।"

चाचाजी ने आगे बतलाया कि यहाँ से उत्तर की ओर श्लेसविग (Schleswig) नगर है जहाँ का नक़्क़ाशीदार कैथेड्रल प्रसिद्ध है। यहाँ के क़िले में ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह देखा जा सकता है। इससे उत्तर की ओर डेनमार्क की सीमा के क़रीब, इस प्रदेश का दूसरा बड़ा नगर फ्लेन्सबुर्ग (Flensburg) है। जहाँ पर सेंट

निकोलस और सेन्ट मेरी के विशाल और भव्य चर्च हैं। पुराने ज़माने का फ्लेन्सबुर्ग हाऊस आज भी एक आश्चर्यजनक चीज़ माना जाता है।

विनोद ने देखा कि श्लेसविग-होल्स्टाइन का प्रदेश पहाड़ियों और जंगलों से भरा पड़ा है। अनेक सुरम्य झीलें भी इस प्रदेश में हैं। दोनों ओर के सागरतट को काट कर अनेक खाड़ियाँ बनी हुई हैं। स्थान स्थान पर नहरें और पवनचक्कियाँ हैं। यहाँ पर स्वास्थ्य-लाभ के अनेक छोटे-मोटे नगर भी हैं।

२

ब्रेमन का बन्दरगाह

श्लेसविग होल्स्टाइन से शाम को हैम्बर्ग लौटने के बाद, विनोद और उसके चाचा ने अच्छी तरह आराम किया क्योंकि उन्हें तड़के ही फिर यात्रा पर निकलना था। सवेरा होते ही नाश्ते के बाद, होटल का बिल चुका कर एक कार द्वारा दोनों, पश्चिम की ओर रवाना हुए। सड़क चौड़ी और साफ-सुथरी थी, कहीं गड्ढों का नाम तक न था। कितनी ही कारें इस सड़क पर तेज़ी से भागी जा रही थीं। विनोद को कुछ अचरज हुआ, उसने चाचाजी से पूछा, "चाचा जी, यह सड़क तो अपने यहाँ की अच्छी सड़कों से भी कई गुना अधिक अच्छी है। क्या यह कोई ख़ास सड़क है?"

"हाँ, इसे बड़ी सड़क कहते हैं। यही क्यों, समूचे जर्मनी में बड़ी-बड़ी सड़कें तुम्हें ऐसी ही मिलेंगी।"

"तब तो इनकी मरम्मत पर भी काफ़ी ख़र्च बैठता होगा!"

"हाँ बैठता ही है! किन्तु तुम देख रहे हो कि यहाँ कितनी ज़्यादा कारें सड़कों पर चलती हैं, इसलिए यह ख़र्च बुरा नहीं लगता।"

"किन्तु यहाँ कारें इतनी अधिक कैसे हैं? हमारे देश के तो बड़े बड़े शहरों के बाहर की सड़कों पर कारों का ऐसा तांता कभी नहीं दिखलाई देता?"

"इसका कारण यह है कि यहाँ कारें बहुत बनती हैं। उनके दाम भी कम हैं। वी. डब्ल्यू. नाम की छोटी कार तो ४–५ हज़ार डी-एम (लगभग ६ हज़ार रुपये) में ही आ जाती है।"

"हमारे देश में ऐसी कार की भी क़ीमत १० हज़ार रुपये से कम न होगी!" विनोद ने कहा।

"तुम ठीक कहते हो! दूसरा कारण, एक नगर से दूसरे नगर के बीच सड़कों पर इतनी कारों के चलने का यह है कि ट्रेन से यात्रा यहाँ कुछ महँगी पड़ती है।"

इस तरह बात-चीत करते लगभग ८० मील की यात्रा के बाद दोनों को दूर से ही चर्चों के ऊँचे ऊँचे मीनार और दूसरी इमारतें धुंधली सी हालत में दिखाई देने लगीं। विनोद समझ गया कि यह जर्मनी का दूसरा बड़ा बन्दरगाह ब्रेमन (Bremen) ही होगा। चाचाजी ने इस बात की पुष्टि की और कहा, "बहुत से लोग जर्मनी आने के लिए हैम्बर्ग के बजाय ब्रेमन के बन्दरगाह पर ही आते हैं। यह जर्मनी का दूसरा बड़ा बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह से भी काफ़ी माल-असबाब, मशीनें वग़ैरह विदेशों को भेजी जाती हैं। ब्रेमन में कुछ सुप्रसिद्ध जहाज़ की कम्पनियों के दफ़्तर भी हैं।"

ब्रेमन में दोनों ने दर्शनीय स्थान देखे। चाचाजी ने बताया

कि यहाँ के मार्केट स्क्वेयर में खड़ा रौलैण्ड स्टेच्यू (Roland Statue) बड़ा पुराना है और १४०४ का बना हुआ है। टाऊन हाल भी लगभग उतना ही पुराना है। यहाँ हज़ार वर्ष पुराना गिरजाघर भी देखने योग्य है। स्टेशन स्क्वेयर में स्थित ओवरसीज़ म्यूज़ियम (समुद्रपारीय संग्रहालय) में उन्हें तरह-तरह की वस्तुएँ सुरक्षित रखी मिलीं। यहाँ एक दर्शक ने उन्हें बताया कि सदियों से समुद्रपार जानेवाले नाविक अलग-अलग देशों से जो अद्भुत चीज़ें लाया करते थे, वे यहीं इस संग्रहालय में जमा हैं। १८९६ और १९१६ के बीच संग्रहालय के कर्मचारियों ने कई देशों की खास वस्तुयें इकट्ठा करने के लिए दूर-दूर की यात्राएँ कीं! इसमें सबसे अधिक श्रेय उत्तरी जर्मनी की लायड कम्पनी को है, जो अपने जहाज़ों में जापान और चीन की दर्शनीय चीजें यहाँ लाई।

यह इस बात का सबूत था कि औद्योगिक होने के साथ साथ ब्रेमन में सांस्कृतिक पहलू की उपेक्षा नहीं की गई है।

दूसरी बड़ी लड़ाई में यहाँ की कुछ चीजें आग लगने से नष्ट हो गईं किन्तु ज़्यादातर चीज़ों को बचा लिया गया। लड़ाई के बाद इसमें ज़्यादा से ज़्यादा देशों की देखने लायक़ प्रतिनिधि चीजों को लाने की कोशिश की जाती रही है।

विनोद ने इस बन्दरगाह को भी हैम्बर्ग जैसा ही पाया। देखने योग्य दो इमारतें लगीं, टाउन हाल और कैथेड्रल। दोनों की

बनावट सुन्दर थी। यह बन्दरगाह भी हैम्बर्ग की तरह सागर-तट पर न होकर, उससे कुछ दूरी पर स्थित है और वेज़र (Weser) नदी के मुहाने से ४१ मील अन्दर की ओर है। कुछ फ़र्क़ उसे यहाँ के निवासियों में भी लगा। हैम्बर्ग के लोगों की बनिस्बत इनके नाक-नक़्शे सुन्दर लगे। चाचाजी ने बताया कि हर साल सितम्बर-अक्तूबर में यहाँ एक बड़ा भारी मेला लगता है जो देखने लायक़ होता है।

ब्रेमन में कुछ घंटे रुक कर दोनों ने यात्रा को जारी रखने का फ़ैसला किया। वे ट्रेन से दक्षिण दिशा में हैनोवर (Hannover) नगर के लिए रवाना हुए। विनोद को पहली बार अनुभव हुआ कि जर्मनी में ट्रेन की यात्रा हमारे देश की तरह कष्टदायक न होकर, आरामदेह है। रेल्वे लाइन के दोनों ओर उसे छोटे-छोटे गाँव भी दिख जाते, किन्तु हमारे देश के गाँवों और इन गाँवों में कितना फ़र्क़ था! ये गाँव कितने साफ-सुथरे और खुशहाल लग रहे थे। उसने डिब्बे में यात्रा करनेवाले लोगों को देखकर जान लिया कि ये शहरी नहीं बल्कि ग्रामवासी हैं। उनमें से दो-एक उन दोनों की ओर भी कभी कभी गौर से देख लिया करते थे। ज़ाहिर था कि वे बात करने के लिए उत्सुक थे किंतु यहाँ के लोगों की ज़बान खास तौर से जर्मन थी। अंग्रेज़ी के शब्दों के उच्चारण जैसे कि वह हैम्बर्ग और ब्रेमन में सुन लिया करते थे, अब नहीं सुनाई पड़ रहे थे।

विनोद के चाचा ने उसके भाव को ताड़ लिया। उन्हें जर्मन

बोलने का कामचलाऊ अभ्यास था। उन्होंने एक जर्मन से कुछ मिनट बातें की और विनोद को बताया कि वह हैनोवर के मेले में भाग लेने जा रहा है, जो हर वर्ष मई महीने के शुरू में हुआ करता है। विनोद को यह जानकर खुशी हुई कि वे लोग ऐसे समय हैनोवर पहुँचेंगे कि मेला भी देख सकते हैं। उसने चाचाजी से कहा, "यह तो बड़ा अच्छा संयोग रहा चाचाजी, किन्तु कहीं ऐसा न हो कि मेले की भीड़ के कारण हम लोगों को कहीं ठहरने की जगह ही न मिले। कम से कम दो-एक दिन तो हम लोग वहाँ ठहरना चाहेंगे ही।"

चाचाजी ने जवाब दिया, "इस जर्मन किसान ने स्टेशन पर उतरते ही हम लोगों को टूरिस्ट गाइड दफ्तर (यात्री-मार्गप्रदर्शक कार्यालय) में पूछताछ के लिए जाने को कहा है। इसका तो कहना है कि मेले की भीड़ के बावजूद हमें किसी न किसी होटल में कमरा मिल जायेगा।"

"किन्तु शायद किराया अधिक देना पड़ेगा!"

"नहीं, वह कहता है कि हर किराए के कमरे मिल जाया करते हैं। यहाँ के टूरिस्ट गाइड दफ़्तर का काम ही यात्रियों का उचित मार्गप्रदर्शन करना है।"

३

हैनोवर से बर्लिन

कुछ घंटों में ट्रेन हैनोवर जंक्शन पर आ पहुँची। अब मेले की भीड़-भाड़ का अनुभव होने लगा। सभी ट्रेनों में से पुरुष और स्त्रियाँ उतर रहे थे। मेला देखने की खुशी में उनके चेहरे दमक रहे थे। सब में एक अजीब उमंग दिखलाई पड़ रही थी। उतरते ही दोनों टूरिस्ट गाइड दफ़्तर में पहुँचे जैसी कि उन्हें उस जर्मन यात्री ने सलाह दी थी। कुछ ही मिनटों में उन्हें पास के ही एक होटल में मामूली किराये पर एक कमरा मिल गया। किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। विनोद को दिल्ली में हुए बड़े मेले की याद आ गई। हालाँकि तब वे लोग अपने एक रिश्तेदार के घर ठहरे थे, फिर भी यात्रियों को होटलों में कमरा पाने के लिए कितनी परेशानी हुई थी। विनोद बोला "चाचाजी हमारे देश के नगरों में भी होटलों में ठहरने का इतना अच्छा इन्तिजाम हो जाए तो कितना अच्छा रहे।"

"यह काम धीरे-धीरे ही हो सकता है और हो भी रहा है।

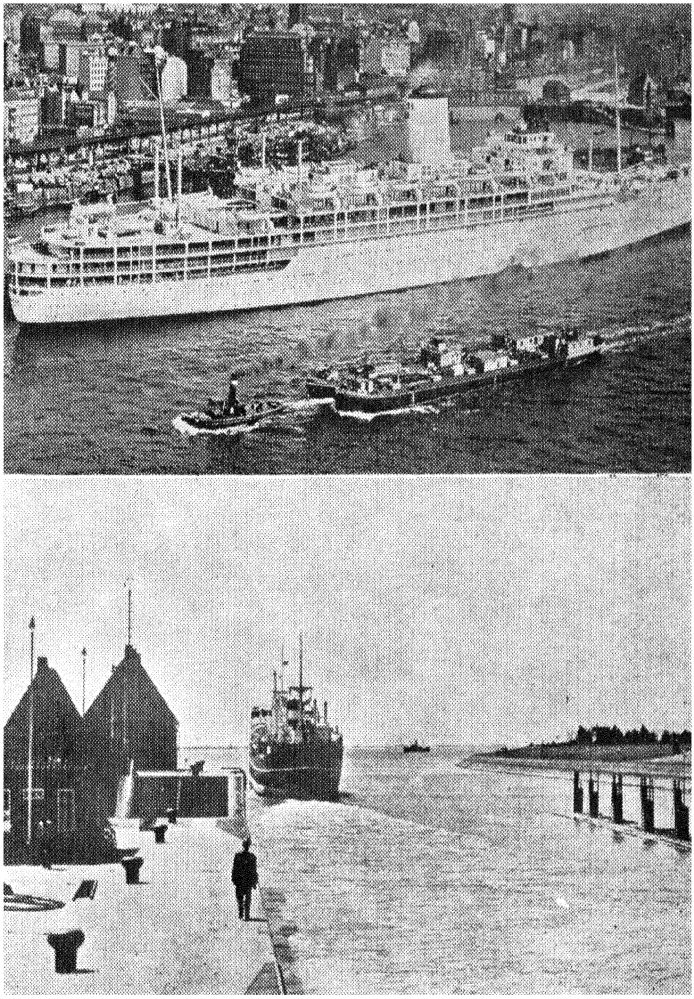

ऊपर : हैम्बर्ग का विशाल बन्दरगाह

नीचे : एल्ब नदी के मुहाने पर कील नहर का बंद

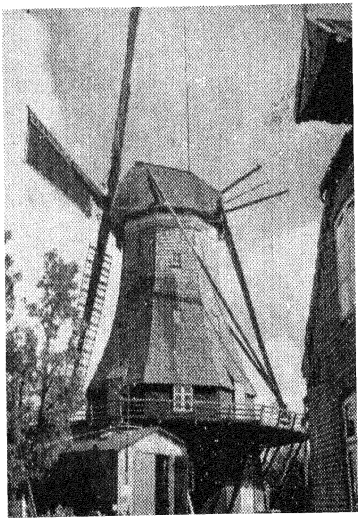

← श्लेस्विग होल्स्टाइन
की पवनचक्की

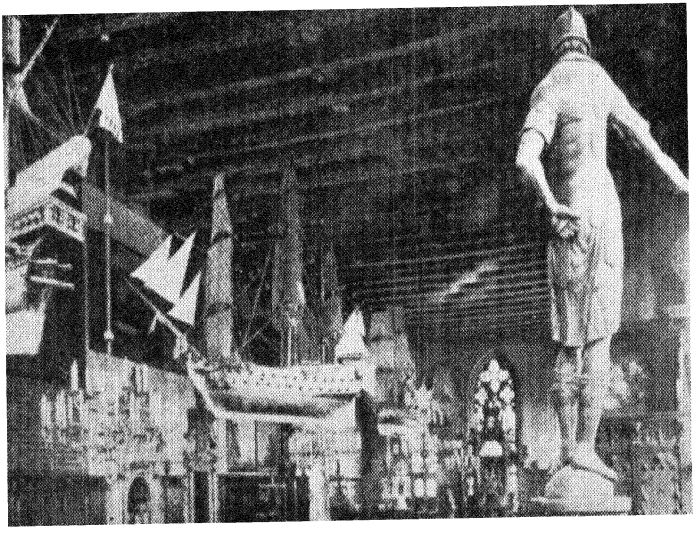

ऊपर : बर्लिन की फ्री युनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय)

नीचे : हैनोवर के औद्योगिक मेले का एक दृश्य

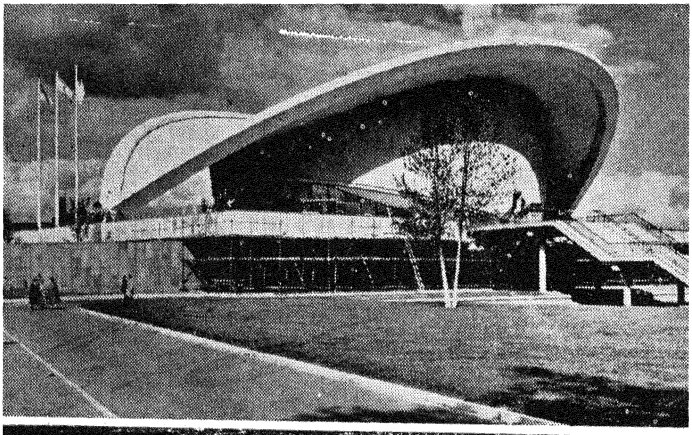

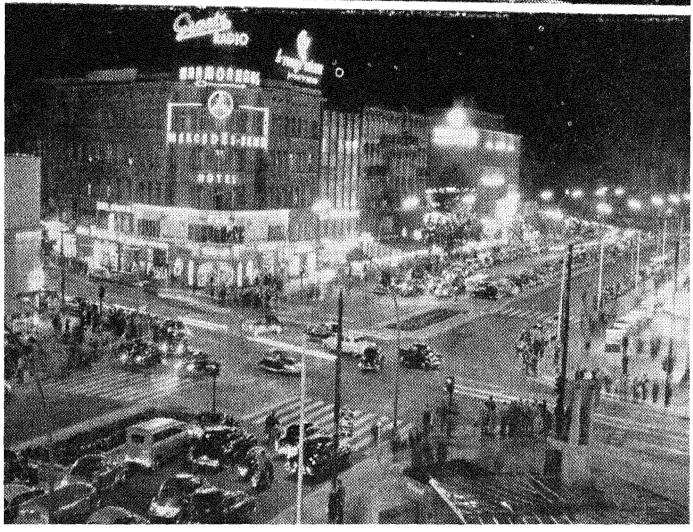

ऊपर : बर्लिन में जर्मनी के कांग्रेस हाल का दृश्य जो वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है

नीचे : कुफ्यूरस्टेण्डम का फ़ैशनेबल इलाक़ा

बर्लिन का ऐतिहासिक कैज़र विल्हेल्म चर्च

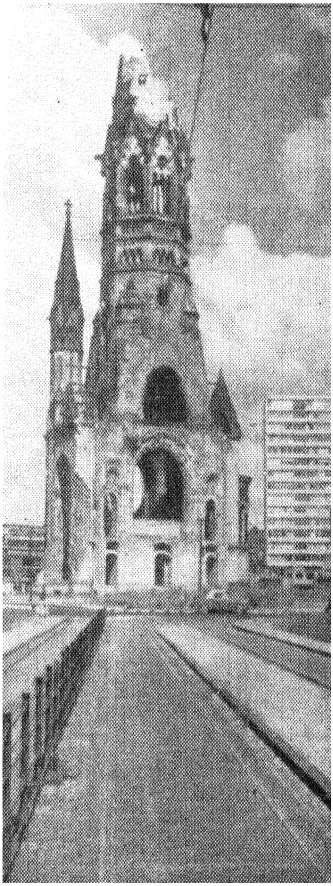

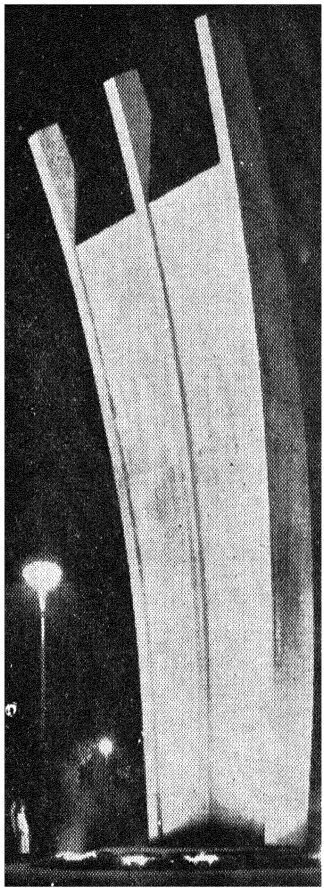

पश्चिमी बर्लिन का 'एअर लिफ्ट मेमोरियल

बर्लिन एकेडेमी आफ म्युज़िक का आधुनिक भवन — निर्माण कला का एक अद्वितीय नमूना

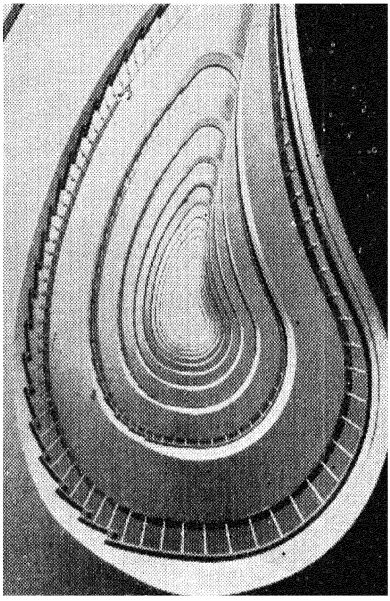

उन्नत आधुनिक वास्तुकला का और एक नमूना 'अल्एंज़' इन्श्योरैन्स(जीवनबीमा)भवन की अद्भुत सीढ़ियाँ →

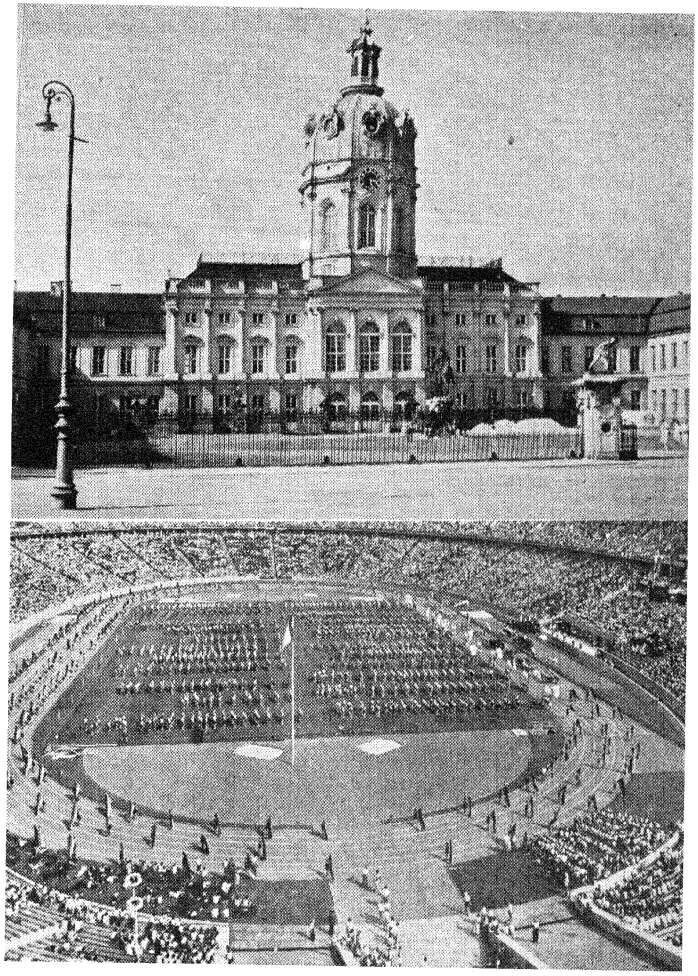

ऊपर : प्रशा की रानी जोफ़ी चार्लोटन द्वारा १६९५ में निर्मित 'चार्लोटनबुर्ग कैसल'
नीचे : बर्लिन का विशाल ऑलिम्पिक स्टेडियम्—जहाँ एक लाख दर्शक बैठ सकते हैं

टावर में लगा हुआ फ्रीडम बेल
जो रोज बजता है →

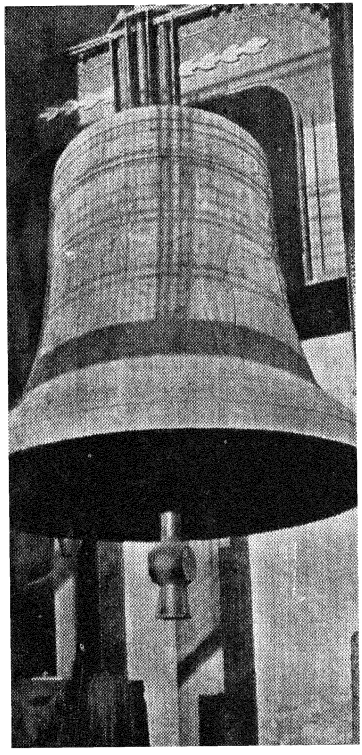

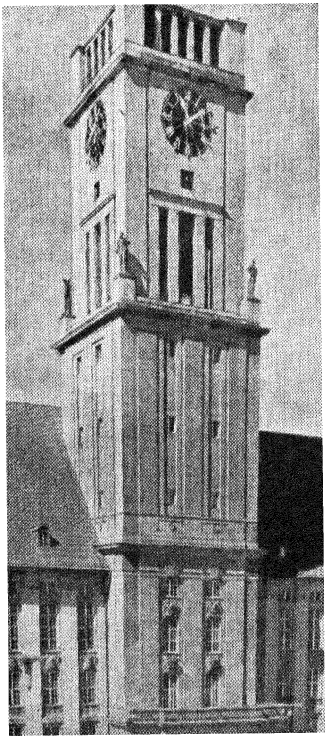

← बर्लिन में श्वेनबर्ग का टाउन हाल

तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि आज़ादी मिले हमें मुश्किल से १२ साल हुए हैं।"

इतने में होटल का बैरा चाय ले आया। शाम हो रही थी, और दोनों थके हुए भी थे। उस दिन वे कहीं न गये। अगले दिन सबेरे वे शहर की मुख्य-मुख्य जगहें देख लेना चाहते थे। दोपहर को तो मेले में जाना था।

सबेरे दोनों हैनोवर शहर घूमने निकले। चाचाजी ने विनोद को बताया कि हैनोवर एक बहुत पुराना और ऐतिहासिक नगर है। इंग्लैंड का राजवंश भी इसी नगर का है। आज भी इस राजवंश का महल और उसके बगीचे देखने लायक़ हैं। अतएव दोनों ने इन्हें देखा। यहाँ पर पुरानी प्रथा के अनुसार आज भी हर साल 'निशानेबाजी की प्रतिस्पर्धा' हुआ करती है। विनोद को यह नगर बाग-बगीचों और फल-फूलों से भरा हुआ दिखाई दिया। यहाँ की सुन्दरता को देख कर वह मुग्ध हो गया।

दूसरे जर्मन नगरों की तरह यहाँ का टाउन हाल भी देखने लायक़ है। एक सरोवर के किनारे होने के कारण उसकी सुन्दरता और भी बढ़ गई है। जगह जगह कल-कारख़ाने देख कर विनोद ने अंदाज़ा लगाया कि इस नगर में उद्योग-धंदे भी हैं। चाचाजी ने कहा, "हर जर्मन नगर में चाहे वह सांस्कृतिक नगर ही क्यों न हो, कोई न कोई कारख़ाना भी होता ही है। हैनोवर में भी ऐसा ही है। यहाँ पर तरह-तरह की मशीनें और रबर बनाने के कारख़ाने हैं। कुछ सूती मिलें, तुम उनकी ऊँची चिमनी से ही

बनती हैं। वह देखो कुछ दूर पर मशहूर कान्टीनेन्टल रबर फ़ैक्टरी देखाई दे रही है। जर्मन ग्रामोफ़ोन कम्पनी का मुख्य कार्यालय भी यहीं है।"

"तब तो यहाँ शायद टेक्निकल ट्रेनिंग का भी कोई इन्तिज़ाम हो?"

"हाँ, यहाँ टेक्निकल युनिवर्सिटी है। चलो उसका भी चक्कर लगाते चलें।"

कुछ घंटों की सैर के बाद दोनों वापस होटल लौटे और दोपहर का भोजन किया। थोड़ी देर के बाद चाय पीकर दोनों मेले के लिए रवाना हुए। मेला शहर के बाहर तीन-चार मील के फासले पर था। वैसे जर्मनी में मेलों की भरमार रहती है, किन्तु यह मेला न केवल जर्मनी में बल्कि दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसमें सभी बड़ी-बड़ी जर्मन कम्पनियाँ भाग लेती हैं। इसके लिए ख़ास ट्रेनें भी चलती हैं।

रास्ते में कारों की लम्बी क़तारों को मेले की ओर जाते देख कर विनोद को कोई ख़ास अचरज नहीं हुआ। अब तक वह देख चुका था कि जर्मनी में कारों की संख्या कितनी ज़्यादा है।

मेला देख कर विनोद की तबीअत ख़ुश हो गई। उसमें सिर्फ़ मशीनों और उनके कल-पुर्ज़ों की ही नुमाइश थी, किन्तु वह इस ख़ूबी के साथ की गई थी कि जी नहीं भरा था। हाँ, एक बात जो विनोद को खटकी वह यह कि वहाँ खाने-पीने का उतना अच्छा

इन्तिज़ाम नहीं था। विनोद ने यह बात चाचाजी से कही तो वे हँस कर बोले, "तुम लोगों का ध्यान हर जगह खाने-पीने की चीज़ों की ओर ही लगा रहता है। जर्मन लोग तो काम के आगे सब कुछ भूल जाते हैं।"

"किन्तु ऐसे काम से क्या लाभ जिससे खाने-पीने का कोई सुख ही नहीं मिले।" विनोद ज़रा तुनक कर बोला।

"अरे तुम तो नाराज़ हो गये! मेरा मतलब है कि हर चीज़ के लिए अलग-अलग समय और जगह होती है।"

अगले दिन दोनों कार द्वारा पूरब की ओर रवाना हुए। इस हाइवे (Highway) की सुंदर बनावट देख कर विनोद बोल उठा, "यह तो बड़ी सुंदर सड़क है, रास्ते में कहीं भी कोई दूसरी सड़क इसमें आकर नहीं मिलती न लोग इस सड़क पर चलते ही नज़र आते हैं। लगभग सभी कारें तेज़ी से चल रही हैं।"

"यही तो हाइवे की विशेषता है। ऐसा हाइवे अमरीका को छोड़ कर और कहीं नहीं मिलेगा।"

"क्या ये हाल ही में बने हैं?"

"नहीं, ये हाल के बने नहीं कहे जा सकते; इन्हें हिटलर ने बनवाया था।"

"उसने तो शायद फ़ौजी कार्यवाई को ध्यान में रख कर इन्हें बनवाया होगा?"

"नहीं, ऐसा तो नहीं कह सकते। उसकी मंशा थी बेरोज़गार

लोगों को रोज़गार देने की। ऐसे काम के लिए लोगों को सड़कें बनवाने में लगाना एक पुराना रिवाज है।"

"हमारे देश में भी कई राजा और बादशाह ऐसे गुज़रे हैं।"

"हाँ, हमारे देश का ग्रैंड ट्रंक रोड इससे मिलता-जुलता है। यह ज़रूर है कि वह ऐसी अच्छी हालत में नहीं रखी जा सकी है।"

रास्ते में विनोद को कई छोटे-छोटे नगर और गाँव दिखाई दिये। दूर से देखने पर वे बड़े सुंदर और साफ-सुथरे लग रहे थे। अब वे ढाई लाख की आबादी वाले एक छोटे नगर ब्रांस्वाइग (Braunschweig) के क़रीब पहुँच गए थे। विनोद के चाचाजी ने बतलाया कि यह नगर कैमरे तथा ऐसे ही यंत्र बनाने का केन्द्र है। प्रसिद्ध जर्मन कैमरा ज़ाईस (Zeiss), और रोलाइफ़्लेक्स (Rolleiflex) भी यहीं बनते हैं। खूब बिकनेवाली जर्मन कार वी. डब्ल्यू. (V. W.) भी इसके पास ही बनती है। हर महीने दो हज़ार ऐसी कारें बनाई जाती हैं। ४-५ महीने पहले से ही आर्डर देना पड़ता है। यह छोटा सा नगर बाहर से बड़ा शांतिपूर्ण लगा। कहीं कोई चहल-पहल नज़र नहीं आ रही थी। नगर के अन्दर जाने की कोई ज़रूरत न समझ कर दोनों बर्लिन की ओर बढ़ चले। चाचाजी ने बतलाया, "पश्चिमी जर्मनी का यह आखिरी नगर है। अब हम पूर्वी जर्मनी की सीमा में प्रवेश करेंगे।"

"क्या हमें दूसरे देश की सीमा में घुसने के लिए पासपोर्ट या वीज़ा जैसी कोई चीज़ नहीं दिखलानी पड़ेगी?"

"क्यों नहीं ? पहले एक देश होते हुए भी आज क़ानून की निगाह में दोनों अलग अलग देश हैं। मैंने हैनोवर में ही वीज़ा ले लिया था।"

"किन्तु पश्चिमी जर्मनी के लिए तो शायद आपने वीज़ा नहीं लिया था।"

"नहीं, पश्चिमी जर्मनी में तीन महीने तक वीज़ा की ज़रूरत नहीं पड़ती।"

इतने में दोनों पूर्वी जर्मनी की पुलिस चौकी पर पहुँच गये। उनके सामान और कागज़ों की कुछ देर तक जाँच की गई, फिर वे आगे बढ़े। यह सड़क उन्हें पहले वाली सड़क जैसी अच्छी नहीं लगी। कारें भी ज़्यादा करके पश्चिमी जर्मनी की ही दिखलाई देती थीं। रास्ते में कुछ दूरी पर उन्हें पोट्सडम (Potsdam) नगर दिखलाई पड़ा। चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि यह नगर कुछ समय तक जर्मन सम्राटों की राजधानी था और उनका राजमहल यहाँ आज भी मौजूद है। हैनोवर से कुछ घंटों की यात्रा के बाद अब वे जर्मनी के सबसे बड़े और प्रसिद्ध नगर और दूसरी लड़ाई के ख़त्म होने तक देश की राजधानी बर्लिन (Berlin) में पहुँच रहे थे।

चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि बर्लिन के बारे में अनेक कहावतें मशहूर हैं। कहते हैं कि जो एक बार यहाँ आ गया, वह हमेशा के लिए इस नगर से प्रेम करने लगता है। यह इतनी दूरी में फैला हुआ है और देखने योग्य यहाँ इतनी चीजें हैं कि एक बार

आकर तो कोई इस नगर को पूरी तरह देख ही नहीं सकता। आज भी यह जर्मनी का सबसे बड़ा नगर है। १९४५ तक बर्लिन जर्मनी की राजधानी था। लड़ाई के अन्त में शहर का प्रशासन चार अधिकार करनेवाली शक्तियों द्वारा मिल-जुल कर किया जाने लगा। १९४८ में रूस ने पश्चिमी राष्ट्रों को मजबूर कर दिया कि वे अपना अधिकार केवल उन्हीं क्षेत्रों पर रखें, जिन पर उनका पहले से ही क़ब्ज़ा था। पूर्वी भाग के लिए एक अलग प्रशासन कायम किया गया, जो रूसी प्रभाव के अन्तर्गत जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक का भाग बन गया। पश्चिमी बर्लिन की आबादी २२ लाख है और जर्मनी का यह सबसे बड़ा नगर है।

"इस देश के बाहर और विशेष करके हमारे देश में भी यही नगर सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। है ना चाचाजी?"

"हाँ, दूसरी लड़ाई के पहले तो यह संसार के प्रसिद्ध और बड़े नगरों में था ही, आज भी संसार के आधुनिकतम नगरों में से एक गिना जाता है।"

"अच्छा चाचाजी, क्या यहाँ कोई ऐसी ऊँची जगह है, जहाँ से हम समूचे नगर पर एक निगाह डाल सकें। मेरा मतलब है कि जिस तरह दिल्ली के पास कुतुब मीनार पर चढ़ने पर बहुत दूर तक के दृश्य दिखलाई पड़ते हैं, वैसे ही क्या यहाँ भी कोई जगह है?"

"हाँ, है क्यों नहीं? यहाँ के ४९० फुट ऊँचे रेडियो टावर पर चढ़ कर बर्लिन के एक बहुत बड़े भाग की झांकी मिल सकती है।"

"तब तो चाचाजी हम उस पर ज़रूर चढ़ेंगे।"

"ज़रूर! लेकिन मुझे डर है कि हम इस यात्रा में शहर की हर देखने लायक़ वस्तु नहीं देख सकते।"

"पर हम यहाँ एक हफ़्ता ठहरेंगे भी तो।"

"एक हफ़्ता ऐसे बड़े शहर के लिए, जहाँ नित्य नई-नई चीज़ें देखने को मिलती हों, कुछ भी नहीं। फिर मुझे यहाँ दफ़्तर का कुछ काम भी तो करना है।"

इस तरह बातें करते करते दोनों बर्लिन नगर में आ पहुँचे। दूर से ही यहाँ की भव्य इमारतें एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रही थीं। अब वे शहर की सीमा में प्रवेश कर रहे थे, जहाँ कारों का तांता सा लगा था, अतएव उन्हें भी अपनी कार धीमी करनी पड़ी। विनोद के लिए अच्छा अवसर था, वह ध्यानपूर्वक को देखने लगा।

"यह क्या? यहाँ तो शहर के भीतर ही झील दिखाई दे रही है। कितना अच्छा दृश्य है!" उसने कहा।

चाचाजी ने कोई जवाब न दिया। उसकी बाल-सुलभ चंचलता पर मुस्करा भर दिए।

सड़कों पर तरह-तरह के लोग, स्त्री-पुरुष, साफ-सुथरी यूरोपीय वेशभूषा में एक दिशा से दूसरी दिशा में आ जा रहे थे। किन्तु उसकी आखें किसी भारतीय को देखने और उससे हिन्दी में दो-दो बातें करने को तरस रही थीं। अरे वह क्या, कुछ दूर पर एक भारतीय लगनेवाला युवक ही तो नज़र आ रहा है।

उसका मन हुआ कि वह चिल्ला कर पूछे कि क्या आप भारत के रहने वाले हैं! बम्बई में तो वह लोगों से पूछा करता था 'क्या आप उत्तर प्रदेश के रहनेवाले हैं?' उत्तर प्रदेश के एक छोटे से नगर में ही उसके पूर्वजों का मकान था और २-३ साल में एक बार वह वहाँ जाया करता था। किन्तु यहाँ तो एक भारतीय होना ही काफ़ी है, चाहे वह काश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक किसी भी इलाक़े का क्यों न हो। सच है, देश से दूरी मनुष्य को एक दूसरे के कितना क़रीब ले आती है। वह इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि वह युवक भीड़ में कहीं गायब हो गया।

"अरे वह तो पता नहीं कहाँ गायब हो गए!" वह अपने आप ही बोल उठा।

"कौन विनोद? क्या यहाँ तुम्हारी जान-पहचान का कोई व्यक्ति दिखाई दिया था, अचरज है।" चाचाजी ने पूछा।

"नहीं चाचाजी, कोई अपने ही देश के थे।" विनोद ज़रा शरमा कर बोला।

"अरे पागल, क्या यहाँ कोई और भारतीय नहीं मिलेगा? किन्तु क्या वह हमारे उत्तर प्रदेश का था?"

"नहीं चाचाजी, अब मैं अनुभव करने लगा हूँ कि हम केवल भारतीय हैं और कुछ भी नहीं।"

"शाबास, यह तुमने ठीक बात कही। किन्तु आशा है कि देश लौट कर भी तुम यही सोचो और समझोगे।"

"मैं आपको वचन देता हूँ कि आगे से अपने को केवल भारतीय

ही समझा करूँगा किन्तु चाचाजी इतनी बड़ी भीड़ में से हम भारतीयों को कैसे खोज निकालेंगे? यहाँ तो वे सागर में बूँद के समान हैं।"

"घबराओ मत, उसका भी रास्ता है। यहाँ भारतीयों का एक असोसिएशन और क्लब है जहाँ हर रोज शाम को कुछ लोग आ ही जाते हैं।"

अब तक वे उस होटल में पहुँच चुके थे, जहाँ उन्हें ठहरना था। लम्बी यात्रा के बाद आराम ज़रूरी था इसलिए उस शाम को वे कहीं नहीं गये। होटल में उन्हें आराम की सभी सुविधाएँ उपलब्ध थीं।

४

बर्लिन की गलियों में

अगले दिन सवेरे सोकर उठने पर विनोद ने अपने को तरो-ताज़ा पाया। तय किया गया कि सवेरे के नाश्ते के बाद घूमने निकला जाय। कुछ ही देर में बैरा चाय और नाश्ते की चीजें ले आया। आज विनोद को चाय पीने में मज़ा आ गया।

"यहाँ की चाय तो बड़ी अच्छी है। है ना चाचाजी?" उसने पूछा।

"चाय तो इस देश में प्रायः हर जगह अच्छी ही मिलती है। किन्तु तुम्हें आज चाय ख़ास तौर पर अच्छी लगने का कारण है बर्लिन देखने का तुम्हारा उत्साह।" चाचाजी ने ज़रा मुस्करा कर कहा। विनोद ने कुछ जवाब न देना ही अच्छा समझा क्योंकि उसे भी चाचाजी की बात में सचाई लग रही थी।

होटल से बाहर निकल कर कुछ देर के बाद दोनों ने एक टैक्सी ली और कुरफ्युरस्टेण्डम (Kurfuerstendamm) क्षेत्र में आये जिसे यहाँ के निवासी सुविधा के लिए कुडम (Kudamm) कह

कर पुकारते हैं। चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि यह यहा का सबसे प्रसिद्ध और चहल-पहल भरा मुहल्ला है। मुहल्ला ही क्यों, इसे एक छोटा सा नगर ही कह सकते हैं। बर्लिन की यही विशेषता है कि यह अनेक छोटे-छोटे नगरों से मिल कर बना है। इनमें से हर एक उसे अपनी ही आकृति और रंग प्रदान करता है। इसकी तुलना बम्बई के हार्नबी रोड, कलकत्ता के चौरंगी, दिल्ली के चांदनी चौक और लखनऊ के हजरतगंज से की जा सकती है। वैसे बर्लिनवासी न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू (Fifth Avenue) और ब्रॉडवे (Broadway) से इसकी तुलना करके गर्व का अनुभव करते हैं।

"तभी तो इसके इर्द-गिर्द बड़े-बड़े रेस्टारैंट, दुकानें और थियेटर दिख रहे हैं।" विनोद बोला।

"हाँ, लेकिन इस क्षेत्र का इतिहास बड़ा पुराना है। १८८० से ही जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्रशासक बिस्मार्क (Bismarck) ने इसे सँवारना शुरू कर दिया था। इस क्षेत्र को वह पेरिस के अच्छे से अच्छे क्षेत्र कैम्पस एलीसिस (Campus Elisis) के मुक़ाबले में देखना चाहता था। दूसरी बड़ी लड़ाई में यहाँ की ज़्यादातर इमारतें नष्ट-भ्रष्ट हो गईं। आज जो भव्य इमारतें और शानदार दुकानें तुम देख रहे हो, ये सब नई ही हैं। इनके कारण बर्लिन की शोभा और भव्यता बहुत बढ़ गई है। इस क्षेत्र में दोनों ने सबसे पहले क्रान्ज़लर कॉरनर (Kranzler Corner) देखा। लड़ाई के पहले बर्लिन आनेवाले लोगों को यहाँ का यह काफ़े बहुत प्रिय था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर दोनों को एक भव्य

होटल केम्पीन्स्की (Hotel Kempinski) दिखलाई पड़ा। इसकी प्रसिद्धि बर्लिन में ही नहीं, बल्कि दूसरे नगरों में भी है।

यहाँ से आगे उन्हें म्युनिसिपल आपेरा की इमारत दिखलाई दी। चाचाजी ने बतलाया कि १८९६ से १९४५ तक यह सुप्रसिद्ध थियेटर की इमारत थी, जो दूसरी लड़ाई में बर्बाद हो गई। कुछ दूर और आगे बढ़ने पर उन्हें यहाँ फ्रांस और ब्रिटेन के सूचना विभाग और संस्कृति केन्द्र के दफ्तर दिखलाई पड़े। उससे कुछ दूर हट कर भव्य टेलीग्राफ बिल्डिंग थी। उसे देख कर विनोद बोला "अच्छा तो यह यहाँ का मुख्य तारघर है?"

"नहीं। यह यहाँ के बड़े समाचार पत्र 'टेलीग्राफ़' का दफ़्तर है।"

"तब तो यह बड़ा पुराना समाचार पत्र होगा।"

"नहीं, इसकी स्थापना दूसरी लड़ाई के बाद १९४९ में हुई थी।"

यहाँ से आगे बढ़ने पर विनोद को एक नहीं कई झीलें एक के बाद एक दिखलाई दीं : हालंज़ी झील (Halensee Lake), किंग्स झील (King's Lake), डियाना झील (Diana Lake), हिर्टा झील (Herta Lake), हुंडेकेलेन झील (Hundekelen Lake) और ग्रुनेवाल्ड (Grunewald Lake) झील। इस झील के पास ही इसी नाम की लॉज भी है जिसमें बहुमूल्य चित्रों की नुमाइश की गई है। पास में ग्रुनेवाल्ड (Grunewald) जंगल है। इन सबने मिल कर इस क्षेत्र की शोभा दुगुनी कर दी है।

इस जगह से दोनों क्ले अली (Clay Allee) चौराहे पर आए जिसका नाम अमेरीकन मिलिट्री गवर्नर के नाम पर पड़ा है। यहाँ पर चाचाजी ने एक इमारत की ओर इशारा कर विनोद को बतलाया कि यह ऑस्कर हेलेनेहाइम क्लीनिक (Oskar-Heleneheim Clinic) है जो जर्मनी में अपंगों का सबसे बड़ी क्लीनिक माना जाता है।

"किन्तु यहाँ होता क्या है?" विनोद ने पूछा।

"चलो अन्दर चल कर दिखलाता हूँ।"

अन्दर जाने पर क्लीनिक से लगे कारखाने में विनोद ने जिन्दगी भर के लिए अपंग लोगों को दरियाँ, जूते और दस्तकारी की दूसरी चीजें बनाते हुए देखा।

यह देख कर उसे कुछ अचरज हुआ।

चाचाजी उसका मनोभाव ताड़ गये और बोले "इन्हें देख कर तुम्हें अचरज हो रहा है न?"

"हाँ, सोच रहा हूँ कि हमारे देश में ऐसे अपाहिज लोग अपने को बिल्कुल निकम्मा समझ कर भीख माँगने का पेशा अपना लेते हैं और यहाँ के लोग हैं कि उत्साह से काम में लगे हुए हैं।"

"यही तो हमारे और पश्चिम के देशों के दृष्टिकोण में अन्तर है। यहाँ कोई समाज पर भार नहीं बनना चाहता। सभी स्वावलम्बी होने की कोशिश करते हैं। अब तो खैर हमारे देश में भी यह भावना पनपने लगी है और कितनी ही जगह ऐसे अपाहिज लोग भी कुछ न कुछ काम करने लगे हैं।"

यहाँ से निकल कर कुछ दूर आगे बढ़ने पर विनोद ने एक विशाल इमारत देखी। जिज्ञासावश वह पूछ बैठा, "चाचाजी, क्या यह किसी बड़ी कम्पनी का दफ़्तर है? बड़ी शानदार इमारत है।"

"नहीं, यह यहाँ की फ्री युनिवर्सिटी है। इसकी स्थापना बर्लिन के विभाजन के बाद १९४८ में हुई थी। यह समूची इमारत फोर्ड फाउण्डेशन के खर्च से बनी है।"

"इस युनिवर्सिटी में तो विद्यार्थियों की बहुत बड़ी तादाद शिक्षा पाती होगी।"

"हाँ, लगभग दस हज़ार।"

"अच्छा! बड़ी संख्या तो यहीं के विद्यार्थियों की ही होगी।"

"हाँ, किन्तु एक तिहाई संख्या पूर्वी जर्मनी के विद्यार्थियों की भी है।"

सौभाग्य से यहाँ उनकी भेंट एक अंग्रेज लेक्चरर से हो गई जो कुछ दिन भारत में रह चुका था। उसने बतलाया कि जर्मनी भर में १८ युनिवर्सिटियाँ और ८ टेक्निकल कालेज हैं। युनिवर्सिटियाँ और कालेज अध्यापन के साथ साथ खोज-कार्य भी करते हैं। सबके संविधान लगभग एक से हैं और सबको स्वशासन प्राप्त है। टेक्निकल कालिजों में ऐसे योग्य वैज्ञानिक लेक्चर के लिए बुलाए जाते हैं, जिन्हें आर्थिक मामलों अथवा उद्योग-धंदों का अनुभव होता है। कला, विज्ञान और अनुसंधान सम्बन्धी एक परिषद् नियुक्त है, जो १९५७ से इनकी सर्वांगीण प्रगति के लिए कार्य कर रही है। प्रतिवर्ष यह परिषद् आवश्यक योजनाओं का कार्यक्रम बनाती है और कोष के उपयोग के लिए सिफ़ारिश करती है—इसकी सीट बर्लिन में है।

पिछले वर्षों में विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या अवकाश के समय रोज़गार करती रही है। ११ प्रतिशत विद्यार्थी अपने अध्ययन का पूरा खर्च बर्दाश्त करते हैं और २६ प्रतिशत आंशिक। १९५७ में योग्य विद्यार्थियों के लिए ३०० लाख डी. एम. की व्यवस्था की गई थी। इस खर्च में से पेशगी भी दिया जाता है। केवल ज़रूरतमंद को पेशगी देने का सिद्धान्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थी का ग़रीब होने के साथ प्रतिभाशाली होना भी ज़रूरी है।

१९४५ से विद्यार्थी संघ ही अपनी युनिवर्सिटी की कई समस्याओं को सुलझाता रहा है। जर्मन रिसर्च असोसियेशन भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देता रहता है। इसे उद्योग और वाणिज्य की संस्थाओं से सहायता प्राप्त होती रहती है।

अँग्रेज़ लेक्चरर को उपर्युक्त जानकारी देने के लिए धन्यवाद देकर आगे बढ़ने पर उन्हें एक मस्जिद दिखलाई दी, जिसे देख कर विनोद को कुछ अचरज हुआ। चाचाजी ने बतलाया कि जर्मनी में यह अकेली मस्जिद है। रात हो चुकी थी, अतएव वहाँ से दोनों होटल लौट आये।

अगले दिन सवेरे नाश्ते के बाद वे एक जर्मन मित्र के साथ फिर शहर देखने निकले। चाचाजी ने बताया कि उनकी आज की सैर मुख्यतः पश्चिमी बर्लिन के मध्य भाग की होगी। इस भाग में उन दोनों ने कला के अनेक केन्द्र देखे जैसे कि ट्वैन्टीएथ सेंचुरी गैलरी (Twentieth Century Gallery), कालेज आफ म्यूज़िक (College of Music), एकेडेमी आफ फाईन आर्ट्स (Academy of

Fine Arts), रिनेसेन्स थियेटर (Renaissance Theatre), शिलर थियेटर (Schiller Theatre) और नया जर्मन आपेरा हाउस जिसके निर्माण का काम अभी जारी था। जर्मन मित्र ने दोनों को बतलाया कि लगभग ये सभी संग्रहालय या आर्ट गैलरियाँ नई बनाई गई हैं, क्योंकि पुरानी तो दूसरी बड़ी लड़ाई में बमबारी से नष्ट हो गई थीं। इनमें से कई को प्रदर्शन कक्ष का रूप दे दिया गया है। इन संग्रहालयों में वस्तुएँ बदली जाती रहती हैं। आपेरा की तो जर्मनी सांस्कृतिक भूमि ही है। फेड्रल रिपब्लिक (Federal Republic) की सीमा में ३९ आपेरा भवन हैं। यह संख्या संसार के किसी भी देश से अधिक है।

"तब तो कहना चाहिए कि हमारे देश के ही समान जर्मनी को भी चित्रकला, संगीत और दूसरी कलाएँ विरासत में मिली हुई हैं," चाचाजी ने कहा।

"हाँ, हमने आपकी सांस्कृतिक परम्परा के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। हमारी संस्कृति भी बहुत पुरानी है। इस सांस्कृतिक परम्परा के कारण ही हम लोगों ने भयानक से भयानक विपत्ति का धैर्य के साथ सामना किया है।" जर्मन मित्र भावावेश में बोलते रहे।

चाचाजी ने कहा—"आपके देश में थियेटर का भी बड़ा प्रचलन लगता है।"

इस पर जर्मन मित्र ने बतलाया कि फेड्रल रिपब्लिक और पश्चिम बर्लिन में थियेटरों की संख्या किसी भी देश से अधिक है। ९७ नगरों में कुल मिला कर लगभग २०० थियेटर हैं। कुछ ओपन

एअर थियेटर (खुले रंग मंच) हैं और कुछ विशेष कार्यक्रम ही पेश करते हैं। जर्मनी के थियेटर मनोरंजन के केन्द्र ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक केन्द्र भी समझे जाते हैं। कुछ थियेटरों के तो अपने ही सदस्य-दर्शक होते हैं। इनकी सदस्यता के लिए इतनी अधिक मांग होती है कि बहुत से लोगों के आवेदन-पत्र ठुकरा दिये जाते हैं। जर्मन जनता परम्परा से ही बजाय किसी दूसरे माध्यम के, थियेटर के माध्यम से पेश की गई चीज़ को जल्दी अपनाती है। इसलिए सांस्कृतिक मामलों में इसे सबसे पहली चीज़ माना जाता है। स्टेज समारोह भी ख़ास-ख़ास मौक़ों पर खेले जाते रहते हैं। ऐसे समारोह जर्मनी भर में प्रसिद्ध हैं।

"किन्तु लगता है कि आजकल आपकी संस्कृति का वह पुराना रूप नहीं रहा।" चाचाजी बोले।

"यह तो स्वाभाविक ही है। हमारा देश पूर्व और पश्चिम के संगम-स्थल पर बसा हुआ है। फिर आज के जर्मनी पर अमरीकी रीति-रिवाजों का भी काफ़ी असर पड़ा है।" मित्र ने जवाब दिया।

इस तरह की बातचीत करते हुए वे आगे बढ़े। दोनों को लगा कि उनकी बातों में विनोद को अधिक मज़ा नहीं आया। अतएव विनोद का मनोरंजन करने के ख़याल से वे यहाँ की प्रसिद्ध नुमाइश और मेले की भूमि में पहुँचे। दूर से ही रेडियो टॉवर (Radio Tower) देखकर, जिस पर ले जाने का चाचाजी ने वचन दिया था, विनोद खुश हो उठा।

मित्र ने बतलाया कि यह रेडियो टॉवर १९२६ में बना था। लिफ़्ट के ज़रिए तीनों ऊपर पहुँचे और १९० फुट की ऊँचाई पर बने रेस्टौरैन्ट में जा बैठे। यहाँ उन्होंने कॉफी का आर्डर दिया। उसकी चुस्की लेते हुए विनोद ने दूर-दूर तक निगाह दौड़ाई और बर्लिन का विशाल और भव्य रूप देखकर मुग्ध हो गया। किन्तु कॉफी पी लेने के बाद जब तीनों टावर की आख़िरी ऊँचाई ४६० फुट पर पहुँचे तब तो आस-पास के दूर-दूर तक के प्रदेश को वहाँ से देख कर विनोद को रोमांच हो गया।

"यह दृश्य मैं कभी नहीं भूलूँगा।" वह अपने आप बोल उठा।

"चलो तुम्हें खुश देख कर मुझे भी खुशी हुई।" चाचाजी ने संतोष के साथ कहा।

नीचे उतरने पर जर्मन मित्र ने बतलाया कि इस नुमाइश-भूमि में ९ पैवेलियन (Pavilion) और १४ नुमाइशी हाल हैं। यहाँ से वे ओलिम्पिक स्टेडियम (Olympic Stadium) पहुँचे।

इसमें एक लाख लोगों के बैठ सकने का इंतिजाम है। स्टेडियम के भीतर ही स्वीमिंग पूल (तैरने का तालाब) और हाकी मैदान हैं। जर्मन मित्र ने बतया कि यद्यपि दूसरी बड़ी लड़ाई में जर्मनी में खेल-कूद की सुविधाएँ, व्यायामशालाएँ, स्टेडियम, स्वीमिंग पूल वगैरह नष्ट हो गये थे, लेकिन आज फिर से वे जगह-जगह दिखलाई पड़ने लगे हैं। फुटबाल और कारों की दौड़—प्रतियोगिता जर्मनी में बहुत लोकप्रिय हैं। हैण्डबाल यहाँ का अपना खेल है। इधर हाल ही में बैडमिंटन भी लोकप्रिय होने लगा है। तैरने के

लिए प्रायः हर नगर में स्वीमिंग पूल बने हुए हैं। जाड़े के मौसम में खेले जानेवाले खेल आल्प्स और ब्लैक फारेस्ट एरिया (Black Forest Area) में तो खेले ही जाते हैं, उत्तरी घाटियों में भी मौसम अनुकूल होने पर खेले जाते हैं।

यहाँ से साउथ पार्क होते हुए, जो एक सुरम्य झील के किनारे स्थित है, वे होटल लौटे।

५

घर घर की बात

अगले दिन चाचाजी को अपनी कम्पनी के काम में ही सारा दिन गुज़ारना था, इसलिए विनोद को कुछ जगहों की सैर कराने का ज़िम्मा जर्मन मित्र ने ले लिया। वे नियत समय पर होटल आ पहुँचे। विनोद को लेकर घुमाते हुए वे एक भव्य राजमहल के सामने पहुँचे। इसके बाहरी फाटक पर दो भव्य सोने की मूर्तियाँ लड़ाई करने की मुद्रा में खड़ी थीं और उनसे आगे एक और घुड़सवार की विशाल मूर्त्ति थी। सब कुछ मिला कर यह एक भव्य दृश्य था। जर्मन मित्र ने बताया कि यह महल चार्लोटेनबुर्ग एस्टेट (Charlottenburg Estate) के नाम से पुकारा जाता है। इसके निर्माण का कार्य प्रशा की रानी ज़ोफ़ी चार्लोटे (Shophie Charlotte) ने १६९५ में शुरू करवाया था।

यहाँ से वे सीधे बोटेनिकल गार्डन (Botanical Garden) पहुँचे। विनोद यह बगीचा देख कर हैरान रह गया। इसमें दुनिया के सब भागों के वृक्ष-पौधे और वनस्पतियाँ उगाई गई हैं। जर्मन

मित्र ने जब उसे हिमालय पर उगनेवाले पेड़-पौधों के नमूने दिखलाए तो विनोद के मुँह से "वाह वाह" निकल गया। जर्मन मित्र ने जो अंग्रेजी भली भांति बोल लेता था इसका अर्थ पूछा तो विनोद ने बताया—"मैं आप लोगों के परिश्रम और लगन की तारीफ़ कर रहा हूँ।"

इस पर खुश होकर जर्मन मित्र ने उसे संसार-प्रसिद्ध विक्टोरिया रेगिया (Victoria Regia) फूल का पौधा दिखलाया।

"किन्तु इसकी तारीफ़ क्या है? इसकी पत्तियाँ तो इतनी बड़ी-बड़ी हैं कि मैंने ऐसी पत्तियाँ आज तक कहीं नहीं देखी थीं।"

"इसकी तारीफ़ यह है कि यह वर्ष भर में केवल दो रातों को ही खिलता है। इसकी पत्तियाँ तो तुम देख ही चुके हो कि कितनी बड़ी हैं। किन्तु साथ ही ये इतनी अधिक मज़बूत भी हैं कि ३५ पौंड तक का बोझ सम्भाल सकती हैं।"

विनोद ने कहा "वाह! कमाल की बात है! इसके बारे में मैं अपने सहपाठियों को ज़रूर बतलाऊँगा।"

यहाँ से कई झीलों से होते हुए वे ग्रुनेवाल्ड टॉवर (Grunewald Tower) पहुँचे। जर्मन मित्र ने बताया कि इस टावर को कैसर विलहेल्म टावर कह कर भी पुकारा जाता है। इसके ऑब्ज़रवेशन प्लेटफ़ार्म (Observation Platform) से जो हाफ़ेल नदी (Havel River) की सतह से ४५० फुट ऊँचा है, पश्चिमी बर्लिन का पूरा दृश्य दिखलाई पड़ता है। दोनों ने यहाँ के टेरेस रेस्टारैन्ट (Terrace Restaurant) में बैठकर चाय पी।

वहाँ से दोनों उस मित्र के घर पहुँचे। आज रात का खाना उन्हें वहीं खाने का निमंत्रण मिला था। चाचाजी वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे।

यहाँ विनोद को पहली बार पश्चिमी जर्मनी के मध्यमवर्ग के परिवार की असली झाँकी देखने को मिली।

बाप-बेटे दोनों एक कार बनानेवाले कारख़ाने के अलग विभागों में काम करते हैं। कारख़ाने में काम का समय सबेरे ७-३० से लेकर शाम को ४ बजे तक होता है। दोनों साथ ही कार में काम पर जाते हैं और शाम को भी साथ ही घर लौटते हैं। घर की मालकिन उस समय खाना टेबल पर रखे उनके आने के इन्तिज़ार में होती है।

बाप-बेटे दोनों ही सप्ताह में पाँच रोज काम करते हैं। शनिवार-रविवार काम पर नहीं जाते। हाँ, यदि सप्ताह का कुछ काम बच रहा हो तो उसे निपटाने के लिए वे शनिवार को भी कारख़ाने में पहुँच जाते हैं। बाक़ी काम को अगले हफ़्ते के लिए रखे रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता।

शाम को ५ बजे बाद सारा परिवार साथ होता है। तेरह-वर्षीया पुत्री स्कूल से १ बजे ही वापस आ जाती है, और बाप तथा भाई के घर वापस लौटने तक स्कूल से लाया हुआ अपना घर का काम कर चुकी होती है। ज़्यादा करके वे सब साथ ही पास के हरे-भरे पार्क में जाते हैं। किन्तु बेटा हर दिन साथ में नहीं जाता। वह अक्सर अपने साथियों के साथ फुटबाल खेलने

चला जाता है। बाप भी हफ़्ते में एक बार एक आर्केस्ट्रा में वायलिन बजाने जाया करता है, जिसका उसे बड़ा शौक़ है।

विनोद को यह जानने की इच्छा हुई कि वह अपने मेज़बानों से पूछे कि उनकी महीने की आमदनी क्या है और वे उसे किस तरह ख़र्च करते हैं, ताकि उसे जर्मनी के मध्यमवर्ग के परिवार के बारे में पूरी पूरी जानकारी हो सके। किन्तु उसे यह बात पूछने में संकोच हो रहा था। आख़िर में उसने अपनी इच्छा चाचाजी पर ज़ाहिर की। उस पर चाचाजी हँस कर बोले, "यह भारत नहीं कि आमदनी तथा परिवार का बजट पूछने पर लोग भड़क जायें। यहाँ तो ऐसे सामाजिक अध्ययन होते ही रहते हैं और लोग ख़ुशी-ख़ुशी ऐसे काम में सहयोग देते हैं।"

आखिरकार चाचाजी ने स्वयं ही परिवार के बजट के बारे में पूछ लिया। विनोद को यह देख कर अचरज हुआ कि घर के मालिक ने बिना किसी संकोच के बतला दिया कि उनकी तनख़्वाह १७२५ डी. एम. (लगभग १९६० रुपये) प्रति माह है। इसमें से वे ८०० डी. एम. घर लाते हैं। तीन कमरे के फ़्लैट के लिए उन्हें हर महीने ६२.६० डी. एम. किराया देना होता है। खाने-पीने पर लगभग ४०० डी. एम. खर्च होता हैं। कम्पनी की जो कार मिली हुई है, उसके लिए १४० डी. एम. खर्च करने पड़ते हैं, जिसमें पेट्रोल, कर, बीमा और गैरेज का ख़र्च भी शामिल है। इसके अलावा पुत्र भी परिवार को अपनी तनख़्वाह का कुछ भाग देता ही रहता है।

"आपने अपना जीवन-बीमा भी करवाया होगा?" इतनी देर के बाद विनोद ने प्रश्न किया।

"हाँ, हमारे कारख़ाने के लगभग सभी लोगों ने बीमा करवाया हुआ है।"

"ताज्जुब है, हमारे देश में तो बीमे से होनेवाले लाभों पर घंटों लेक्चर देने पर भी लोगों को उसके लिए आसानी से तैयार होते नहीं पाया जाता।" विनोद बोला।

"हमारे देश में ऐसा नहीं है। बीमे के लाभ को सभी समझते हैं। यह ज़रूर है कि कोई कम रक़म का बीमा करवाता है, तो कोई अधिक का। मुझे हर महीने ५६ डी. एम. देने होते हैं।" घर के मालिक ने बतलाया।

होते-होते बात जर्मन महिलाओं पर होने लगी। घर की मालकिन ने बतलाया कि जर्मन औरतें अपना समय बच्चों की देख-भाल और रसोईघर में ही बिताना ज़्यादा पसन्द करती हैं। फिर भी लड़ाई के ज़माने में और उसके बाद उत्पन्न कई समस्याओं का सामना करने के लिए उन्होंने घर के बाहर काम करके भी अपनी दक्षता दिखलाई है। इससे यह जाहिर होता है कि ज़रूरत पड़ने पर वे पुरुषों के काम बड़ी आसानी से सम्भाल सकती हैं। ज्यों-ज्यों रोज़गार बढ़ता जा रहा है, उद्योग-धंदों में औरतों के काम करने की गुंजाइश बढ़ती जा रही है। फिर भी, जहाँ तक हो सके जर्मन महिला अपना कार्यक्षेत्र अपने घर के भीतर ही रखना पसन्द करती है। सभाओं, जुलूसों, और क्लब जीवन से उसे कोई ख़ास रुचि नहीं।

आज चाचाजी को कोई विशेष काम न था, अतएव नाश्ते के बाद दोनों बाहर निकले। यह भी तय हुआ कि शाम को दोनों भारतीय असोसिएशन जायेंगे जहाँ विनोद को अपने देशवासियों से मिलने का मौक़ा मिलेगा।

यहाँ से जब दोनों होटल वापस लौटे तो विनोद बड़ा खुश था। उसे पहली बार एक जर्मन परिवार को इतनी अच्छी तरह से देखने का मौक़ा जो मिला था।

६

बर्लिन से बिदाई

आज सबसे पहले चाचा जी उसे इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी (Institute of Technology) में ले गए क्योंकि दोनों ने अनुभव किया कि घूमने-फिरने की बहुत सी जगहें वे अब तक देख चुके हैं। सौभाग्य से वहाँ उनकी भेंट एक भारतीय छात्र महेश से हो गई जो पिछले दो वर्षों से इस युनिवर्सिटी में शिक्षा ले रहा था।

महेश ने बतलाया—"इस इंस्टीट्यूट की स्थापना सन् १८०० में हुई थी। दूसरी बड़ी लड़ाई में इसके कुछ भाग बमबारी से नष्ट हो गये थे। इसी में १८७९ में स्थापित रायल एकेडेमी आफ आर्किटेक्चर (Royal Academy of Architecture) और १८२१ में स्थापित कालेज आफ इंडस्ट्रियल आर्ट्स (College of Industrial Arts) भी शामिल कर लिए गए हैं। इसके बाद इसका नाम टेक्नालाजिकल युनिवर्सिटी आफ बर्लिन (Technological University of Berlin) पड़ा।"

विनोद ने पूछा—"क्या यहाँ दूसरे विषयों की भी शिक्षा दी जाती है?"

महेश ने जवाब दिया—"हाँ, १९१५ में कालेज आफ माइनिंग (College of Mining) और बाद में आर्ट्स का एक और स्कूल इसमें शामिल कर लिए गए हैं।"

चाचाजी ने कहा—"तब तो यों कहना चाहिए कि यह केवल इंस्टीट्यूट या कालेज ही नहीं, बल्कि एक युनिवर्सिटी है।"

महेश बोला—"बिलकुल ठीक कहते हैं। अब यह एक नियमित युनिवर्सिटी ही है।"

विनोद ने कहा—"तब तो यहाँ विद्यार्थियों की भी काफी संख्या होगी। आपने कौन सा विषय ले रखा है?"

"यहाँ पर ६ हज़ार से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। मैं माइनिंग पढ़ रहा हूँ," महेश ने उत्तर दिया।

"यह तुमने अच्छा किया, महेश। आज हमारे देश को इस विषय में दक्ष युवकों की ज़रूरत है। भारत तो खानों का घर है। यह ज़रूर है कि उनका ठीक-ठीक विकास अभी नहीं हो पाया है।"

"आपका कहना तो ठीक है, किन्तु यदि अपने देश में मुझे काम करने का अवसर न मिला तो मेरा यहीं आ कर बस जाने का इरादा है।" महेश ने जरा संकोच से कहा।

"वाह अवसर क्यों न मिलेगा? यह ज़रूर है कि तुम्हें वहाँ उतना वेतन नहीं मिलेगा जितने की तुम आशा रखते हो। किन्तु आज

देश को तुम्हारे जैसे युवकों की सेवा की जरूरत है। तुम्हारा पहला कर्तव्य अपने देश की सेवा करना है।"

महेश ने कोई उत्तर न दिया। वह अनुभव कर रहा था कि चाचाजी जो कुछ कह रहे हैं, वह ठीक है।

महेश के लेक्चर खत्म हो चुके थे इसलिए उसने उन दोनों के साथ घूमने का प्रस्ताव रखा। इससे बढ़ कर दोनों को और क्या खुशी हो सकती थी। खास करके चाचाजी को तो बहुत खुशी हुई। उन्होंने विनोद को महेश के हवाले किया और शाम को उसे भारतीय असोसिएशन में पहुँचाने का वायदा लेकर स्वयं खिसक गये।

"चलो अच्छा ही हुआ, हम लोग आज़ादी से एक दूसरे से बात कर सकेंगे।" विनोद ने कहा, महेश ने भी मुस्करा कर इसका समर्थन किया। उसे इस बात की बेहद खुशी थी कि वह अपने एक देशवासी के काम आ रहा है।

टेक्निकल युनिवर्सिटी से चलकर एक टैक्सी में दोनों हंसा उप-विभाग पहुँचे। महेश विनोद को बर्लिनवासियों के वैभव की एक झाँकी दिखा देना चाहता था। और सचमुच में ही यह क्षेत्र देख कर विनोद की आखें अचरज से फैल गईं। एक साथ ऐसी सुन्दर और भव्य इमारतें उसने आज तक नहीं देखी थीं। यही नहीं, यहाँ पर २२ देशों के इमारतों के नमूने देख कर तो वह और भी वाह वाह कर उठा और बोला—"इसको बनानेवाले भी धन्य हैं।"

महेश ने बतलाया—"इस क्षेत्र की इमारतों की योजना एक संसार प्रसिद्ध इंजीनियरिंग फर्म ने की है। १९४५ में यह क्षेत्र बमबारी से बिल्कुल नष्ट हो गया था। भारत में तो तुमने शायद इस तरह अलग-अलग देशों की इमारतों को एक जगह पर बने हुए नहीं देखा होगा।"

"बिलकुल इसी ढाँचे की तो नहीं किन्तु इससे कुछ मिलती-जुलती झलक नई दिल्ली की चाणक्यपुरी में मिलती है, जहाँ कई दूतावासों के भवन हैं।"

यहाँ से दोनों विजय स्तम्भ (Victory Column) पहुँचे। महेश ने बतलाया कि यह स्तम्भ १८६४, १८६५ और १८७०-७१ की लड़ाइयों की यादगार में बनाया गया है। स्तम्भ पर स्थापित खड़ी हुई विजय की देवी की मूर्ति सुप्रसिद्ध जर्मन मूर्तिकार ड्रेक ने बनाई है।

इसके दो सौ फुट ऊँचे प्लेटफार्म से दोनों को पूर्वी बर्लिन के सिटी हाल का लाल ईंट का बना हुआ शानदार टावर साफ़-साफ़ दिखलाई दे रहा था।

यहाँ से दोनों बर्लिन के आधुनिक प्रवेश द्वार टेम्पिलहोफ (Templehof Airport) पहुँचे। यहीं पर विनोद ने ऐतिहासिक एअरलिफ़्ट मेमोरियल को देखा। यह एक ऊँची और शानदार मेहराब है जो एक पुल के प्रतीक के रूप में बनाई गई है। महेश ने बतलाया कि जब जून १९४८ में सोवियत रूस ने बर्लिन की घेरेबन्दी कर ली थी, तब से मई १९४९ तक पश्चिमी राष्ट्रों के विमानों ने ३ लाख बार

उड़ानें करके पश्चिमी बर्लिन को भोजन, ईंधन वग़ैरह पहुँचा कर उस घेरेबन्दी को व्यर्थ साबित कर दिया था। इस बीच इन विमानों द्वारा लगभग २० लाख टन सामान पश्चिमी बर्लिन के क्षेत्र में लाया गया। उन दिनों पश्चिमी बर्लिन के ३ हवाई अड्डों पर हर घंटे एक विमान उतरा करता था।

"वाह क्या अद्भुत बात है! किन्तु क्या इसमें कुछ लोगों को जान से भी हाथ गँवाना पड़ा?" विनोद ने पूछा।

"हाँ, पश्चिमी राष्ट्रों के क़रीब ७४ वायुयान कर्मचारियों और हवाई अड्डे के जर्मन कर्मचारियों कों प्राण गँवाने पड़े। उन्हीं की यादगार में तो यह शानदार मेहराब बर्लिनवासियों ने खड़ी की है," महेश ने जवाब दिया।

"अच्छा इस तरह किसी बड़े शहर के बीचों-बीच तो मैंने कहीं भी कोई हवाई अड्डा नहीं देखा है," विनोद बोला।

"यह विशेषता केवल यहीं पश्चिमी बर्लिन में ही है।" महेश ने उसकी जिज्ञासा शान्त की।

कुछ देर ठहर कर महेश ने फिर कहा "अब मैं तुम्हें एक ऐसी जगह ले चलूँगा जिसे देख कर तुम्हारी तबीअत खुश हो जायेगी। मेरा मतलब यहाँ के चिड़ियाघर से है जो यूरोप भर में अपने ढंग का निराला है।"

कुछ देर ही में दोनों चिड़ियाघर जा पहुँचे। महेश ने बताया कि इसकी स्थापना सौ वर्ष पूर्व हुई थी। किन्तु १९४३ में बमबारी के कारण यहाँ के ९३ पशुओं को छोड़कर सब मर गए थे। विनोद

को यहाँ लगभग दो हज़ार तरह के जंगली और पालतू जानवरों की विभिन्न किस्में देखने को मिलीं।

चिड़ियाघर से लगा हुआ मछलीघर भी दोनों ने देखा, जिसे देख कर विनोद को बम्बई के तारापोरवाला मछलीघर की याद आ गई। लेकिन यहाँ का मछलीघर बहुत बड़ा था और इसमें सभी तरह की मछलियाँ—कछुए, मगरमच्छ और दूसरे समुद्री जानवर—रखे गये थे।

चिड़ियाघर से निकल कर दोनों क़ैसर विल्हेल्म मेमोरियल चर्च (Kaiser Wilhelm Memorial Church) देखने गये। यह चर्च १८९५ में बनाया गया था। आज इसकी इमारत में तरह तरह की फैशनेबल दुकानें और दो सिनेमा थियेटर स्थित हैं। सबसे निराली इसकी चार मंजिलों की गैरेज है जिसमें ५०० कारें एक साथ खड़ी की जा सकती हैं।

इसके बाद यहाँ से दोनों भारतीय असोसिएशन पहुँचे। विनोद को अपने कितने ही देशवासियों से मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। कुछ लोग तो उसके अपने नगर बम्बई के भी थे। ज़्यादातर लोग किसी ऊँची शिक्षा के सिलसिले में ही जर्मनी आये हुए थे और कुछ इत्तफ़ाक़ से बर्लिन में थे। व्यापार-धन्दे के सिलसिले में यहाँ आये हुए लोगों की संख्या कम ही थी। उन लोगों को यह जानकर प्रसन्नता और संतोष हुआ कि विनोद को जर्मनी और ख़ास करके बर्लिन बहुत सुंदर लगा।

चाचाजी और विनोद को अपनी योजना के अनुसार अब बर्लिन में केवल दो ही दिन रहना था। यह तय हुआ कि पहले दिन वे

जर्मन थियेटर देखें और दूसरे दिन वे दर्शनीय स्थान, जो किसी वजह से देखने से रह गये हैं।

थियेटर हाल जाने पर विनोद ने देखा कि सभी उम्र के जर्मन लोग थियेटर को बड़े उत्साह से देखने आते हैं। चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि जर्मनों को विदेशी नाटक अपने देश में खेलने का बड़ा शौक़ है। विनोद जर्मन नाटक को अधिक समझ तो नहीं सका किन्तु अभिनेता-अभिनेत्रियों के अभिनय को उसने प्रभावशाली पाया। उनके हाव-भाव और बोलने के तरीक़े से वह वार्तालाप का बहुत कुछ मतलब लगा लेता था। यह नाटक देखने से उसे एक लाभ यह हुआ कि वह आज के जर्मनी की समस्याओं को कुछ कुछ समझ गया।

"चाचाजी, क्या जर्मनी में सिनेमा का अधिक प्रचार नहीं है?"

"है, क्यों नहीं, किन्तु उतना नहीं जितना कि दूसरे देशों में।"

"यहाँ फिल्में तो बनती ही होंगी?"

"क्यों नहीं, यह ज़रूर है कि उनको देश के बाहर कम ही भेजा जाता है। हर साल बर्लिन में विश्व चलचित्र त्योहार (World Film Festival) होता है जिसमें संसार भर के देशों की फिल्में दिखलाई जाती हैं।"

अगले दिन दोनों उन स्थानों को देखने निकले जिन्हें वे पहले नहीं देख सके थे।

अब बर्लिन से विदा लेने का समय आ गया। चाचाजी अपनी कम्पनी का काम पूरा कर चुके थे और विनोद भी इतने दिनों रह

डुसेलडोर्फ़ का एक मार्ग →

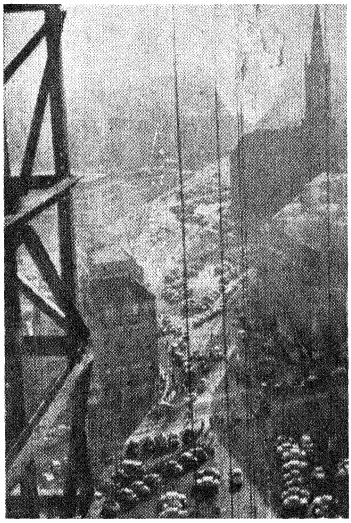

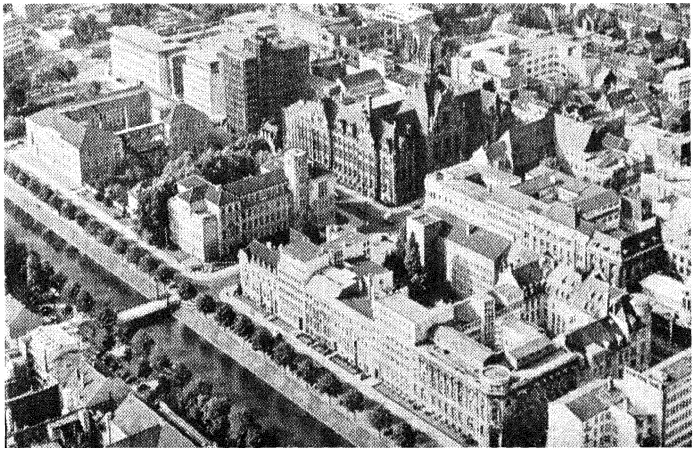

वायुयान से लिया गया डुसेलडोर्फ़ का दृश्य

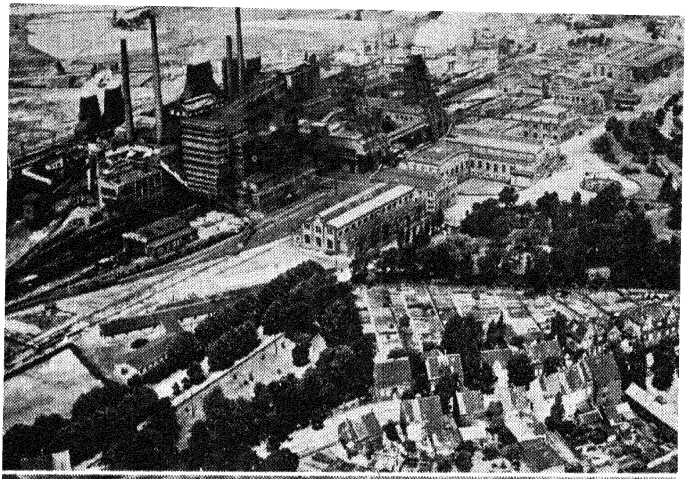

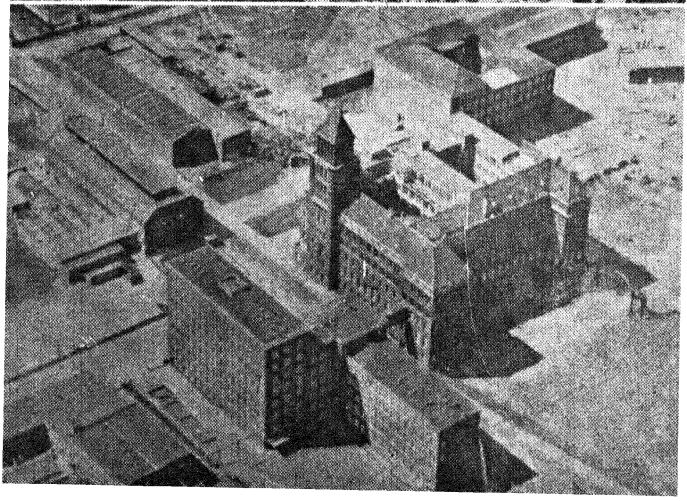

ऊपर : एसन में कोयले की खानों का क्षेत्र

नीचे : एसन में क्रप कम्पनी का प्रधान कार्यालय

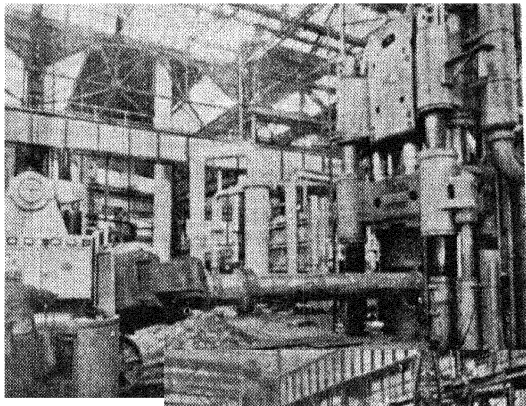

क्रुप कम्पनी का
जलशक्ति से
संचालित
ढलाई विभाग

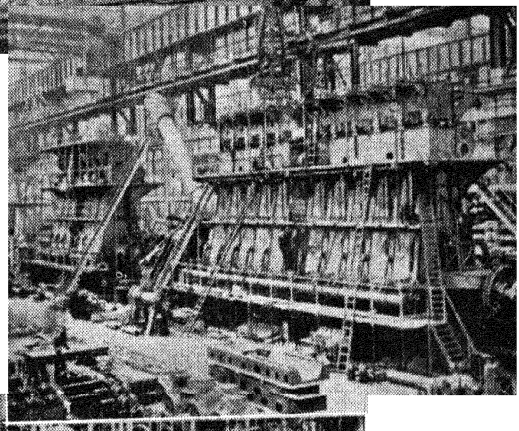

प कम्पनी का डिज़ि
टर निर्माण-विभाग

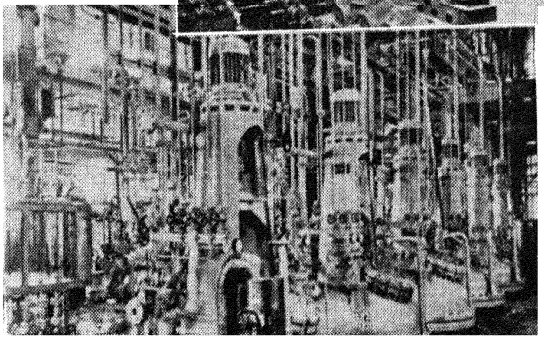

बायर डॉइचवर्क्स के
केमिकल-
विभाग का
दृश्य

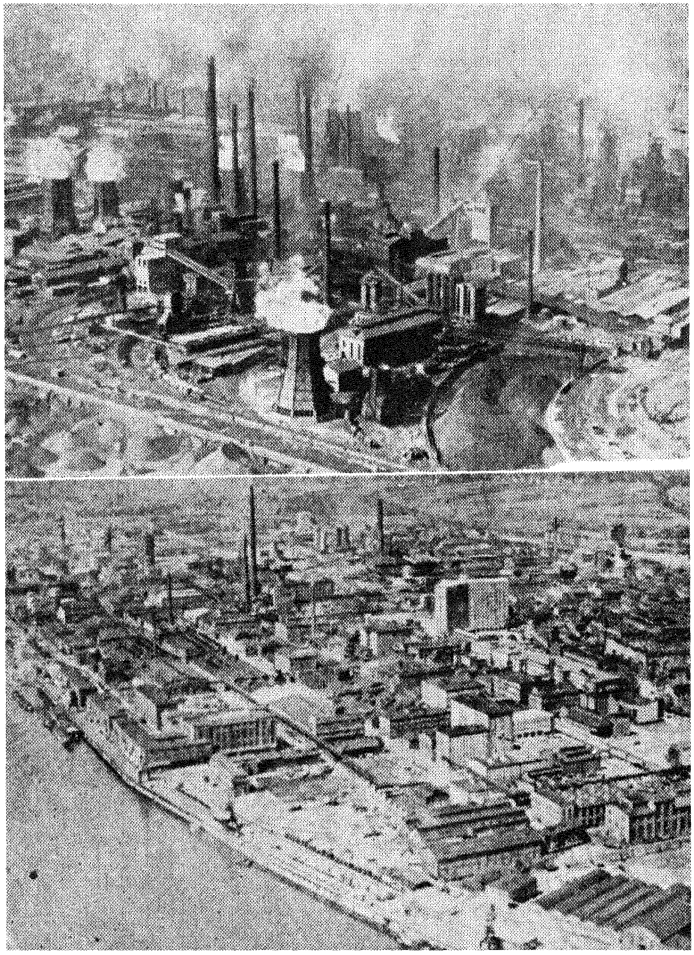

ऊपर : डोर्टमुण्ड में लोहेका एक विशाल कारख़ाना

नीचे : फ्रैंकफुर्ट में जर्मनी की सबसे बड़ी "हुइस्ट" कम्पनी का केमिकल कारख़ाना

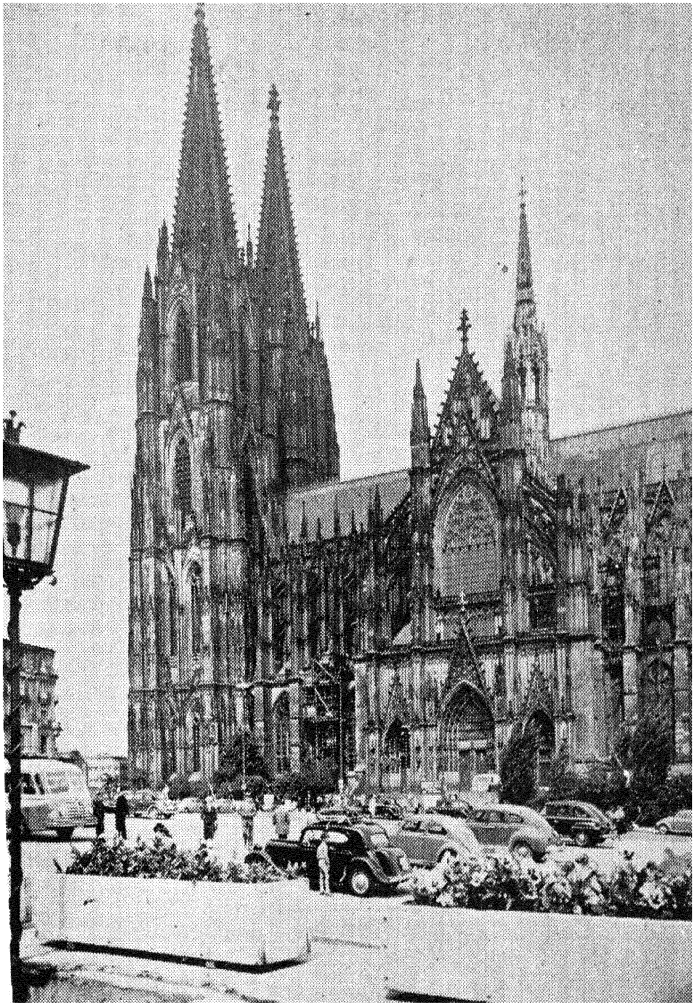

कोलन का विश्वप्रसिद्ध कैथेड्रल

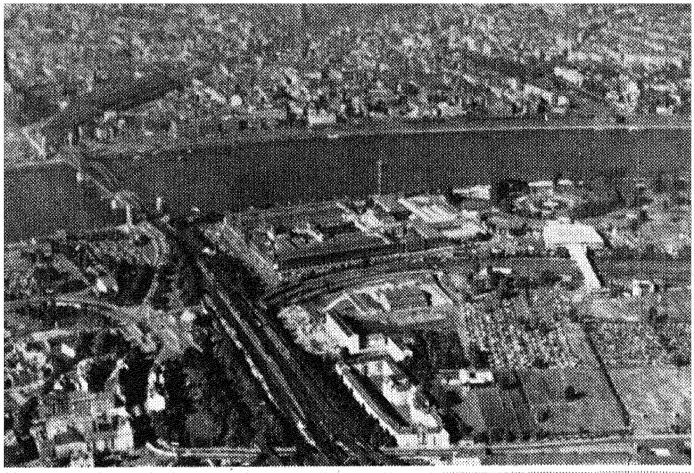

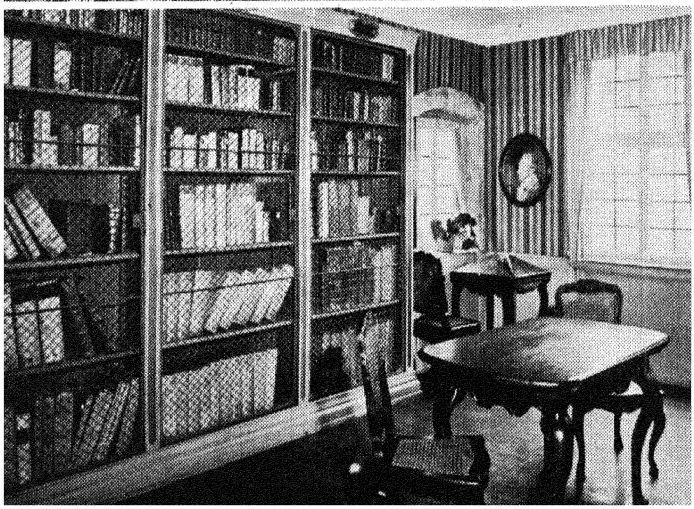

ऊपर : नदी के तटपर स्थित कोलन नगर का दृश्य

नीचे : विश्वप्रसिद्ध कवि गोयटे का अध्ययन-कक्ष

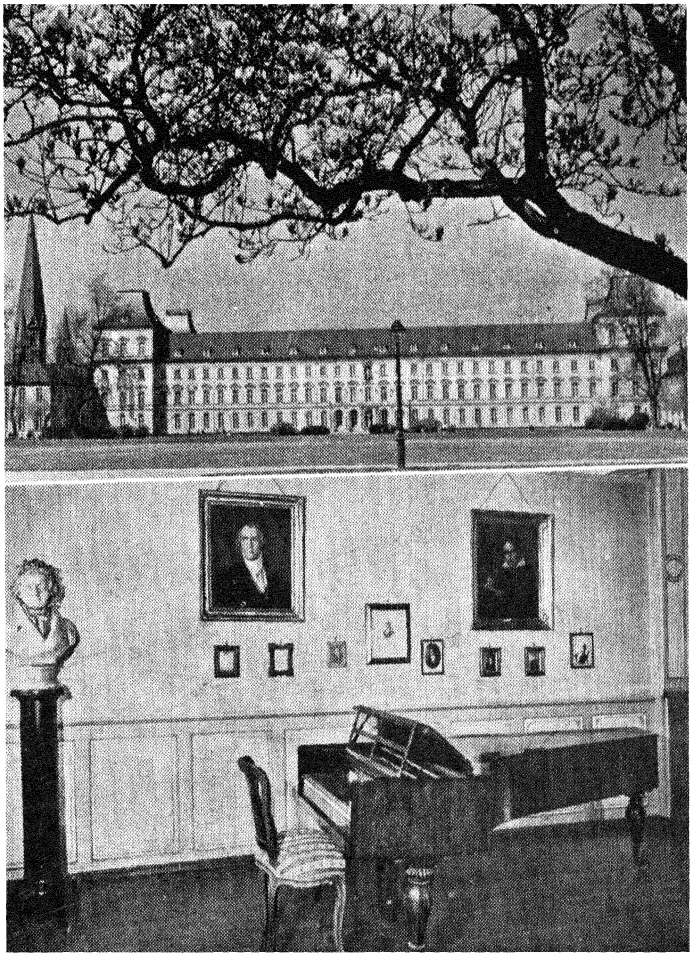

ऊपर : बोन का प्राचीन विश्वविद्यालय

नीचे : बिटहोवेन का संगीत-कक्ष

→
स्टुटगार्ट का
टेलीविज़न
टावर

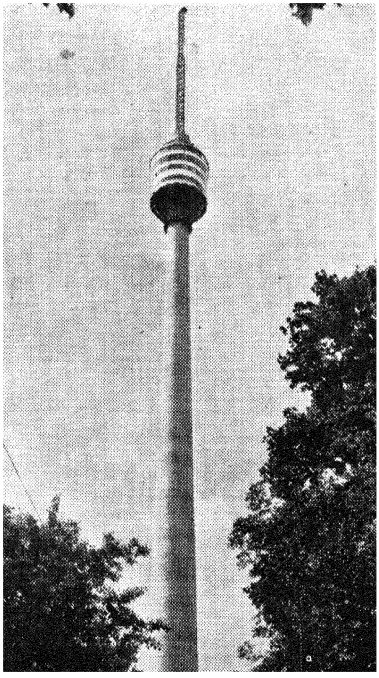

टिटीज़े में ब्लेक
फॉरेस्ट क्षेत्र का
मनोरम दृश्य
↓

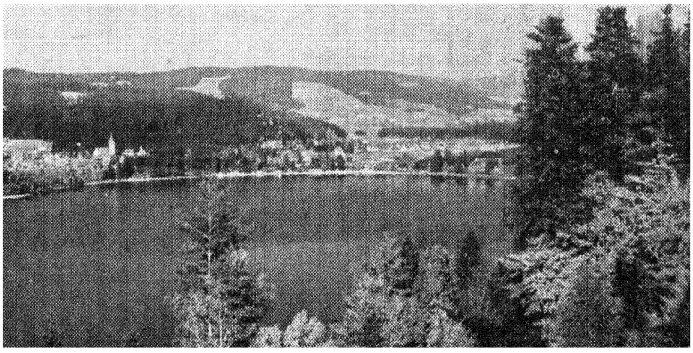

कर सारा नगर भलीभाँति देख चुका था। बर्लिन को देख लेने के बाद उसे प्रतीत हुआ कि मानों वह समूचे जर्मनी को देख चुका है। यहीं पर पहली बार उसे जर्मन लोगों के साथ घनिष्ट सम्पर्क में आने का मौक़ा मिला था। अभी तक वह उन्हें लड़ाकू और हैवान की तरह काम करनेवाली क़ौम समझता रहा था। अब वह उनकी इंसानियत और दूसरे गुणों को देख चुका था। वे कितने मिलनसार और छल-कपट से दूर लोग निकले। भारतवालों से मिलकर तो उन्हें ख़ास तौर पर ख़ुशी हुआ करती थी। विनोद ने इस बीच बर्लिन में अपनी उम्र के कितने ही जर्मन विद्यार्थियों से दोस्ती कर ली थी। देखना है कि उनमें से कितने उसे चिट्ठी लिखते हैं, वायदा तो क़रीब करीब हर एक ने किया था।

होटल का बिल चुका कर दोनों हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए। विनोद पहली बार हवाई जहाज़ से यात्रा करने जा रहा था। होटल छोड़ते हुए उसे दुख अनुभव हुआ। इस बीच वह मैनेजर से लेकर बैर तक से हिल-मिल गया था क्योंकि यहाँ भाषा की कोई ख़ास दिक़्क़त तो थी नहीं।

७

अंगूरों के बाग़ीचे

बर्लिन से वे दोनों हवाई जहाज द्वारा डुसेलडोर्फ (Duesseldorf) के लिए रवाना हुए। एक अंग्रेजी बोलनेवाले जर्मन यात्री ने विनोद को बतलाया कि डुसेलडोर्फ जर्मनी का हवाई जहाजों के जाने-आने का दूसरा सबसे बड़ा अड्डा है। यात्री ने कहा, "डुसेलडोर्फ को हम लोग जर्मनी का पेरिस कहते हैं। यह उत्तरी राइन वेस्टफालिन (North Rhine Westfalen) की राजधानी भी है।"

"तब तो यह बड़ा सुन्दर शहर होगा। फ़ैशन का केन्द्र होगा।"

"हाँ, और साथ ही कारोबार करनेवाली बड़ी बड़ी कम्पनियों के दफ़्तर भी यहाँ हैं। बड़े बड़े व्यापारी और उद्योगपति यहाँ रहते हैं।"

विनोद को बम्बई की याद आ गई। "ठीक बम्बई जैसा ही।"

"बम्बई मैंने देखा तो नहीं, लेकिन लोगों को कहते ज़रूर सुना है कि वह यूरोप के अच्छे से अच्छे नगर का मुकाबला कर सकता

है। व्यापार-धन्दे का केन्द्र होने के नाते तो वह संसार भर में प्रसिद्ध है ही।"

अपने देश के, अपने नगर के बारे में बातें सुन कर विनोद को खुशी हुई।

जहाज अब एक सुन्दर दिखाई देने वाले शहर के ऊपर चक्कर काट रहा था। अब तक विनोद उस जर्मन यात्री से खूब हिल-मिल गया था। अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए सभी सवाल चाचाजी से ही पूछने के बजाय वह अब उससे पूछने लगा।

"यह तो किसी नदी पर बसा हुआ लगता है, पानी की पतली सी धारा दिखलाई पड़ रही हैं," उसने पूछा।

"हाँ, यह जर्मनी की सब से बड़ी और प्रसिद्ध नदी है। बतला सकते हो कौन सी?"

"राइन।"

"हाँ, यहाँ के आस-पास का क्षेत्र सबसे अधिक घनी आबादी वाला है। उद्योग-धन्दे भी सबसे ज़्यादा यहीं हैं।"

"तब तो शायद यह रूर (Ruhr) क्षेत्र होगा।"

"वाह तुम तो हमारे देश के बारे में बहुत सी बातें जानते हो।"

"हाँ, लेकिन अफसोस तो यह है कि आपके देश के लोग हमारे देश के बारे में इतनी बातें नहीं जानते।"

"कुछ हद तक तुम्हारी यह बात सही हो सकती हैं, किन्तु अगली बार जब तुम यहाँ आओगे तब ऐसा नहीं पाओगे। तब तक

हमारे बच्चे दुनिया के बारे में काफ़ी जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे, ख़ास कर भारत के बारे में।"

यह बातें करते करते हवाई जहाज़ ज़मीन पर आ लगा। विनोद और उसके चाचाजी तथा दूसरे सभी यात्री उतरे। उस जर्मन यात्री से विदा लेते समय विनोद ने उसे भारत आने का न्यौता दे ही डाला।

डुसेलडोर्फ की सुन्दरता, उसके सुन्दर सुन्दर बंगले देख कर विनोद की तबीअत खुश हो गई। यह सचमुच ही एक आधुनिक नगर लगता था जो दूसरे विश्वयुद्ध के बाद बनाया गया है। यहाँ का अजायबघर विनोद को ख़ास तौर पर अच्छा लगा। शहर के बाहरी क्षेत्रों में उसे बहुत से बड़े-बड़े कारखाने दिखे। अगले दिन दोनों ने निशानेबाज़ी की प्रतियोगिता देखी, जिसे पास-पड़ोस के काफ़ी लोग उत्साह पूर्वक देखने आये थे। यह प्रतियोगिता एक परम्परा के रूप में हर साल यहाँ की जाती है। विनोद को पता चला कि हर साल १० और ११ नवम्बर को सेंट मार्टिन दिवस (Saint Martin) भी यहाँ धूमधाम से मनाया जाता है। इस मौक़े पर रात को बच्चे लालटेन लेकर जुलूस निकालते हैं।

चाचाजी ने बतलाया कि डुसेलडोर्फ से कुछ मील उत्तर में डुइसबुर्ग (Duisburg) का बन्दरगाह है। यह राइन और रूर (Ruhr) नदियों के संगम पर स्थित है और संसार का सबसे बड़ा नदी-बन्दरगाह माना जाता है। सबसे अधिक माल-

असबाब भी इसी बन्दरगाह से बाहर भेजा जाता है। यहीं पर प्रसिद्ध डेमाग (Demag) इस्पात कारखाना भी है।

यहाँ से दोनों एसिन (Essen) के औद्योगिक नगर में पहुँचे। यह कोयला उद्योग का केन्द्र है। इसे ख़रीदारी का नगर कह कर पुकारा जाता है। विनोद ने यहाँ पर बहुत बड़ी-बड़ी कारें देखीं।

चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि संसार-प्रसिद्ध क्रुप (Krupp) का इस्पात का कारख़ाना भी यहीं है। इस कारख़ाने ने जर्मनी के उद्योग-धन्दों को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायता की है।

"हमारे देश में भी तो बड़े बड़े इस्पात के कारख़ाने खुल रहे हैं।" विनोद बोल उठा।

"बिल्कुल ठीक। किन्तु बता सकते हो कि वह कहाँ कहाँ खुल रहे हैं और किन देशों की सहायता से?"

"हाँ, क्यों नहीं। एक तो भिलाई में रूसी सहायता से। दूसरा दुर्गापुर में ब्रिटेन की सहायता से....."।

"और तीसरा?"

"तीसरा—ज़रा सोचना पड़ेगा। अरे हाँ, याद आया। राऊरकेला में।"

"बहुत अच्छे। तुमसे मैं बहुत खुश हूँ। यह बतला सकते हो कि राऊरकेला का इस्पात कारख़ाना किसकी सहायता से बन रहा है?"

"क्या जर्मनी की सहायता से?"

"हाँ, और क्रुप ही को उसका श्रेय है।"

"वाह, तब तो मैं ऐसी कम्पनी के दफ़्तर को ज़रूर देखूँगा जो मेरे देश की प्रगति में सहायक हो रही है।"

"शायद तुम्हें मालूम नहीं कि क्रुप ने राऊरकेला में इस्पात का कारख़ाना खोलने में भाग लेने के अलावा बिहार, बम्बई और कलकत्ता में सीमेंट के कारख़ाने खोलने में भी सहायता की है। यही नहीं, तुंगभद्रा बांध, मैथान बांध आदि के बनाये जाने में भी इस फ़र्म ने बहुत महत्त्व का काम किया है।"

"ऐसी फ़र्म पर तो जर्मनों को नाज़ होना चाहिए।"

"है ही। तभी तो क्रुप को जिनके नाम पर इस फ़र्म का नाम है, इस्पात का राजा कहा जाता है।"

कुछ देर में ही विनोद को कई बड़े-बड़े कारख़ाने और उनकी चिमनियाँ दिखलाई पड़ने लगीं। विनोद बोला :—

"शायद कोयले की सुविधा के कारण ही यहाँ ऐसे बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गये हैं।"

"हाँ, बिलकुल यही बात है।"

यहाँ के मानेसमन (Mannesmann) जैसे बड़े कारख़ाने तो उसने आज तक नहीं देखे थे। वह तो अपने आप में ही छोटा सा नगर लगता था। हर ज़रूरत का सामान कारख़ाने के अहाते के भीतर ही मिल जाता था।

चाचाजी ने बताया कि एसेन से कुछ दूर पर कोयला क्षेत्र का दूसरा मुख्य नगर डोर्टमुन्ड (Dortmund) है। यहाँ पर लोहा,

इस्पात और रेलगाड़ियों के कल-पुर्ज़े बनाने के कारख़ाने हैं। नगर का ज़्यादातर भाग नया बना हुआ है।

"क्या यह नगर भी और जर्मन नगरों की तरह किसी नदी के किनारे है?"

"हाँ, यह एम्स (Ems) नदी के किनारे है। चूँकि एम्स नदी की नहर यहीं पर इस नदी से मिलती भी है, इसलिए यहाँ पर नदी के ज़रिए सामान भेजा जाया करता है।"

चाचाजी को लगा कि विनोद कल-कारख़ाने देखते और उनकी बातें सुनते-सुनते ऊब गया है। अब उसे कोई ऐसा नगर दिखलाना चाहिए जिसमें कोई नई बात हो। वे बोले "यहाँ से हम वूपरताल (Wuppertal) चलते हैं। वहाँ मैं तुम्हें एक ऐसी चीज दिखलाऊँगा जो दुनिया में कम ही जगह है।"

"वह क्या?" विनोद ने पूछा। सचमुच ही वह हर नगर में सबसे पहले कारख़ाने की चिमनियाँ देखते-देखते ऊबने लगा था।

"वहाँ पहुँच कर ही देख लेना।"

और वूपरताल पहुँचते ही विनोद ने जो अचरजभरी चीज़ देखी वह थी आसमान में चलने वाली हवाई गाड़ी (Aerial train) यह दृश्य देखने लायक था। जिस तरह बम्बई में बिना इंजिन की बिजली की गाड़ी चलते देख कर किसी गाँव से पहली बार बम्बई आनेवाला हैरान रह जाता है, वही हाल विनोद का भी हुआ। इस आसमानी गाड़ी की दूसरी विशेषता यह थी कि उसमें दो-तीन डिब्बे ही थे।

चाचाजी ने उसे हैरान देख कर कहा, "यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम लोग उसमें बैठ कर चलें भी।"

विनोद उत्साह से बोला, "जरूर चाचाजी, ताकि भारत लौट कर मैं अपने साथियों को यह भी बता सकूँ कि मैं ऐसी ट्रेन में बैठा भी हूँ।"

वूपरताल से जब दोनों कोलोन (Koeln) के लिए रवाना हुए तो विनोद को इस बात का सन्तोष था कि वहाँ आकर न उसने केवल ऐसी ट्रेन देखी बल्कि उसमें थोड़ी देर के लिए सैर भी की है।

चाचाजी ने बताया कि कोलोन नगर जर्मनी का एक पुराना सांस्कृतिक नगर है और यहाँ के बड़े नगरों में से एक है। "यहाँ की एक चीज़ दुनिया भर में प्रसिद्ध है। बतला सकते हो वह क्या चीज है?" उन्होंने पूछा।

"मैं तो नहीं जानता।"

"किन्तु तुमने सुना कई बार होगा।"

"ऐसा नहीं हो सकता—हरगिज़ नहीं।"

"यह बात है? अच्छा तुमने कोलोन वाटर का नाम नहीं सुना?"

"सुना क्यों नहीं, बल्कि इस्तेमाल भी किया है। तो क्या वह यहीं बनता है?"

"सभी तो नहीं लेकिन प्रसिद्ध यहीं का है। यही कारण है कि वह सेण्ट जहाँ भी बना हो नाम उसको कोलोन वाटर का ही दिया जाता है।"

"जिस तरह से सभी सन्तरों को नागपुरी सन्तरा या सभी तरह के अमरूदों को इलाहाबादी अमरूद बताया जाता है?" विनोद ने कहा।

चाचाजी ने विनोद को बताया कि यहाँ से राइन का प्रदेश शुरू होता है। राइन नदी का इस देश में वही स्थान है जो हमारे देश में गंगा का।"

"तब तो गंगा की ही तरह राइन की प्रशंसा में भी अनेक गाने और कथाएँ बनी होंगी!"

"हाँ, राइन अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, अंगूर के बाग़ीचों और ऐतिहासिक क़िलों के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश के निवासियों की अपनी ही विशेषता है। यहाँ के लोग सरल, खुशमिज़ाज, चिन्तक और कल्पना की उड़ान भरनेवाले होते हैं। इस नदी का इतिहास दो हज़ार साल पुराना है; इसके तट पर अनेक नगर बसे हुए हैं।"

कोलोन राइन के किनारे बसा हुआ है और व्यापार का केन्द्र है। इस नगर की भव्य और ऊँची इमारतों की बनावट देखते ही बनती है। इनमें सब से भव्य इमारत है यहाँ का कैथेड्रल, जो अपनी सुन्दर बनावट के लिए दुनिया भर में बेजोड़ माना जाता है। इसकी तुलना रोम के सेंट पाल कैथेड्रल (St. Paul Cathedral) और पेरिस के नाट्रे डम कैथेड्रल (Notre Dome Cathedral) से की जाती है। यह बहुत ही पवित्र माना जाता है। इसके यहाँ होने के कारण ही दूसरी बड़ी लड़ाई में इस नगर पर मित्रराष्ट्रों ने बमबारी नहीं की। तभी यहाँ की सभी पुरानी इमारतें अच्छी

दशा में खड़ी हैं। यहाँ का पुराना टाउन हाल भी देखने लायक़ इमारत है। ओपेरा हाल भी बिल्कुल नया है।"

विनोद और उसके चाचा एक बड़े कारखाने से होकर गुज़रे। चाचाजी ने बताया कि यह संसार-प्रसिद्ध फोर्ड मोटर का मुख्य कारख़ाना और दफ़्तर है। चाचाजी ने आगे बतलाया कि हर बसन्त और पतझड़ में यहाँ मेला लगा करता है। हर साल निशानेबाज़ी की प्रतियोगिता भी इस शहर में की जाती है। कोलोन एक बड़ा रेल्वे जंक्शन भी है।

विनोद कार में सैर कर-ते करते कुछ थक गया था; इसलिए यहाँ से दोनों ट्रेन में ही बोन (Bonn) के लिए रवाना हुए। कोलोन से उसकी दूरी अधिक नहीं है। ट्रेन चली तो शहर की सुन्दरता देख कर विनोद मुग्ध हो गया। कितना हरा-भरा प्रदेश था वह। राइन पर कितने ही स्टीमर चल रहे थे। एक जर्मन यात्री ने जो अंग्रेज़ी बोल लेता था, दोनों को बताया कि उस प्रदेश की मनोरम सुन्दरता को देख कर जर्मन गायकों ने प्रकृति की प्रशंसा में कितने ही गीत बनाए हैं।

उसने यह भी बताया कि इस नदी पर हर साल कोलोन से नावों का जुलूस निकला करता है जो बड़ा शानदार हुआ करता है।

आधे घंटे में ही ट्रेन बोन पहुँच गई। बोन के बारे में विनोद ने पहले से ही सुन रखा था। एक तो वह पश्चिमी जर्मनी की राजधानी है, दूसरे यहाँ पर एक बड़ी पुरानी युनिवर्सिटी है जिसकी स्थापना १८१८ में हुई थी।

बोन छोटा सा नगर है, इस कारण यहाँ कोई खास चहल-पहल नज़र नहीं आई। हाँ, पार्लियामेंट के अधिवेशन के समय यहाँ जर्मनी के सभी भागों के लोग आते हैं। चाचाजी ने बताया कि हर साल १० और ११ नवम्बर को यहां सेंट मार्टिन दिन धूमधाम से मनाया जाता है जबकि रात के समय बच्चे लालटेनें लेकर जुलूस निकालते हैं। संगीत का मेला भी यहाँ हर साल लगता है। यह नगर जगत् प्रसिद्ध जर्मन संगीतज्ञ बेटहोवेन (Beethoven) की जन्मभूमि भी है।

बोन में विनोद को कई देशों के लोग दिखलाई दिये। राजधानी होने के नाते यहाँ प्रायः सभी देशों के नागरिक देखे जा सकते हैं,। केवल कम्युनिस्ट देशों के लोग ही इसके अपवाद हैं।

बोन में दोनों को कुछ दिन ठहरना पड़ गया क्योंकि चाचाजी को अपनी कम्पनी का कुछ काम करना था। अक्सर रोज ही उनका समय सरकारी दफ़्तरों में बीतने लगा। विनोद ने अच्छा मौक़ा जानकर कुछ ख़रीद-फ़रोख़्त की, कुछ स्कूलों और युनिवर्सिटी के चक्कर काटे। यहाँ का अजायबघर भी वह देख आया। कुछ लोगों से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई। वह उनके घर भी गया।

उसके दोस्तों ने उसे सलाह दी कि बोन से आगे का रास्ता वह स्टीमर से तय करे; राइन नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ने-वाली स्टीमर से ही सुन्दर दृश्य देखने को मिलेंगे। उसने चाचाजी के आगे यह प्रस्ताव रखा तो उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी मान लिया।

८

जर्मनी का प्रयागराज

जर्मन ट्रेन सर्विस के ही समान यहाँ की स्टीमर सर्विस भी उन्हें बड़ी आरामदेह लगी। यात्रियों ने उन्हें बताया कि कोलोन से माइन्ज़ तक की स्टीमर-यात्रा बहुत ही लोकप्रिय है। इस क्षेत्र में राइन की धारा बड़ी चौड़ी है और नदी के दोनों किनारों के दृश्य मनोरम हैं। जगह जगह अंगूर की बेलें छाई हैं चाचाजी ने बताया कि यह प्रदेश अंगूर उगाने के लिए प्रसिद्ध है। अंगूर की शराब बनाना यहाँ के लोगों का मुख्य धंदा है। रास्ते में उन्होंने कोब्लेन्ज़ (Koblenz) का छोटा सा शहर देखा। एक पुराना क़िला भी उन्हें दिखलाई पड़ा। पता चला कि यह एक ऐतिहासिक क़िला है। कई जर्मन कवियों ने इस पर कविताएँ लिखी हैं। कुछ घंटों की यात्रा के बाद एक शहर की चिमनियाँ और चर्चों के ऊँचे ऊँचे टावर दिखने लगे। कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक दूसरी नदी की पतली धारा राइन में मिलती दिखाई दी। कितना अद्भुत दृश्य था वह! उसे अपने देश के प्रयागराज की

याद आ गई और कुछ क्षणों के लिए वह अपने में ही खो गया। उसे अपना देश, अपने भाई-बहन और सहपाठी सभी याद आने लगे। सहसा चाचाजी ने उसका ध्यान तोड़ दिया। पूछा? "क्यों तुम्हें अपने देश की याद आ गई—इलाहाबाद के संगम की?"

विनोद को कुछ अचरज हुआ, बोला, "आपने यह कैसे जाना?"

"मामूली सी बात है। दूसरे देश में अपने देश के किसी दृश्य से मिलता-जुलता दृश्य देख कर अपने देश की याद आ ही जाती है।" चाचाजी ज़रा हँस कर बोले।

"चाचाजी यह कौन सा शहर है?" विनोद ने पूछा। वह नहीं चाहता था कि चाचाजी उससे उसके भाई-बहनों के बारे में कोई सवाल पूछें। उसे उन सबकी याद सता रही थी। बम्बई से चलते समय चाचाजी ने जब यों ही कह दिया था कि देखना विनोद पहली बार बाहर जाकर तुम्हें यहाँ के लोगों की याद न सताने लगे, यदि ऐसा हुआ तो सैर का सारा मज़ा किरकिरा हो जायेगा, तो उसने जवाब में कहा था, "नहीं चाचाजी, मैं ऐसे लड़कों में नहीं हूँ।"

और आज वह अपनी इस स्वाभाविक कमज़ोरी को छिपा लेना चाहता था।

चाचाजी ने बताया कि यह नगर माइन्ज़ (Mainz) और छोटी नदी मेन (Main) है। नगर अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए

प्रसिद्ध है, जर्मनी भर से लोग यहाँ छुट्टियाँ बिताने आते हैं। यह राइन प्रदेश की राजधानी भी है।

"अच्छा, वे दूर पर जो कई तम्बू दिख रहे हैं, शायद छुट्टी मनानेवालों के कैम्प हैं।"

"हाँ, यहाँ कैम्पिंग के लिए बड़ी अच्छी अच्छी जगहें हैं।"

"यह शहर तो छोटा सा ही है, फिर भी दूसरे जर्मन शहरों की तरह यहाँ भी उद्योग-धंदे तो होंगे ही।"

"हाँ, मुख्य धंदा है शराब बनाने का। यहाँ की शराब दूर-दूर तक भेजी जाती है। ज़्यादातर नदी के रास्ते से ही यहाँ की शराब दूसरी जगहों को भेजी जाती है। इसी नगर में आधुनिक छपाई के पितामह गुटेनबर्ग (Gutenberg) का जन्म हुआ था।"

कुछ घंटे शहर के आस पास के दृश्य देखने के बाद दोनों ने यात्रा जारी रखी। अब वे ट्रेन से २२ मील के फासले पर फ्रेंकफुर्ट (Frankfurt) के लिए रवाना हुए। विनोद ने इस नगर का नाम पहले से ही सुन रखा था। उसे मालूम था कि यह जर्मनी के प्रसिद्ध नगरों में से एक है।

चाचाजी ने बतलाया कि यहाँ जर्मनी का सबसे बड़ा और आधुनिक हवाई अड्डा बन रहा है। यहाँ से सीधे न्यूयार्क तक की सर्विस उपलब्ध है।

यहाँ का प्रसिद्ध कैथेड्रल, बोटेनिकल गार्डन (Botanical Garden) और आपेरा थियेटर भी देखने लायक़ स्थान निकले। प्रसिद्ध और पुराना थियेटर तो बमबारी के कारण नष्ट हो चुका था।

"यहाँ युनिवर्सिटी भी ज़रूर होगी?" विनोद बोला।

"हाँ, यहाँ युनिवर्सिटी है तो सही, किन्तु उतनी पुरानी नहीं जितनी कि कई दूसरे शहरों की हैं। इसकी स्थापना १९१४ में हुई थी। फ्रैंकफुर्ट पुस्तकें छापने का बड़ा केन्द्र है। हर साल यहाँ पुस्तकों की नुमाइश के लिए बड़ा मेला लगता है। इसमें देश-विदेश के पुस्तक-प्रकाशक भाग लेते हैं।"

विनोद को यह भी मालूम हुआ कि दूसरे जर्मन शहरों की तरह फ्रैंकफुर्ट में भी कई तरह की मशीनें बनाने और पुस्तकें छापने के प्रेस हैं। अन्य मेले आर नुमाइशें भी यहाँ होती ही रहती हैं।

"तब तो यहाँ कोई बड़ा पुस्तकालय भी होगा।" विनोद ने पूछा।

"हाँ, यहाँ के पुस्तकालय में ढाई लाख पुस्तकें हैं।" चाचाजी बोले।

"तब तो यहाँ अच्छी-अच्छी पुस्तकों का ख़ूब प्रकाशन होता होगा।" विनोद ने कहा।

"यहाँ कम दाम पर अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। चूँकि यहाँ की बुक कम्युनिटीज़ (Book Communities) के २४ लाख से भी अधिक सदस्य हैं इसलिए प्रकाशकों को नुक़सान का डर नहीं रहता।" चाचाजी ने बतलाया।

"यदि यह बात है तब तो पश्चिमी जर्मनी पुस्तक प्रकाशन में संसार के देशों में से एक माना जा सकता है।"

"हाँ, मुझे एक जर्मन मित्र ने बतलाया था कि पुस्तक प्रकाशन में जर्मनी का संसार भर में चौथा नम्बर है। यहाँ की सरकार ने सभी प्रकार

के साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए भी इन्तिज़ाम किया है" चाचाजी ने कहा।

"जैसा कि हमारी सरकार भी पिछले कुछ सालों से कर रही है।" विनोद बोला।

"हाँ।" चाचाजी ने जवाब दिया।

शहर देखते समय विनोद ने चाचाजी से पूछा, "आप तो कहते थे कि यह बहुत पुराना शहर है। लेकिन यहाँ ज़्यादातर इमारतें तो बिल्कुल नये ढंग की और पिछले कुछ सालों की ही बनी लगती हैं।"

"हाँ, तुम सही कह रहे हो। पिछली बड़ी लड़ाई में यह शहर बमबारी से लगभग नष्ट हो गया था।"

"आपने शायद यह भी बतलाया था कि यह जर्मनी के सबसे बड़े कवि की जन्मभूमि है। आपने उसकी तुलना कालिदास से की थी।"

"शाबाश! तुम्हारी याद्दाश्त अच्छी है। वह था महाकवि गोयटे (Goethe)। जर्मनों को अपने इस कवि पर बड़ा नाज़ है।"

"तब तो उन्होंने उसकी यादगार के रूप में कोई न कोई इमारत ज़रूर बनवाई होगी।"

"दूसरी इमारत क्यों, उस कवि के मकान को ही उन्होंने म्यूज़ियम बना डाला है। अभी हम वह मकान देखेंगे तब तुम्हें मेरी इस बात पर विश्वास हो जायेगा।" दोनों ने महाकवि गोयटे (Goethe) की यादगार में सुरक्षित उसका मकान देखा।

फ्रैंकफुर्ट में एक नुमाइश का मैदान है जिसमें मार्च और अप्रैल में मेला लगा करता है। कुछ खंडहरों को देख कर विनोद ने पूछा कि ये कब के हैं। चाचाजी ने बतलाया कि इन्हें तोड़कर ही नया नगर बसाया गया है। कुछ खण्डहर स्मारक के तौर पर रहने दिए गए हैं। यहाँ नगर के तीस रास्ते आकर मिलते हैं। खास कर हवाई अड्डे की ओर जाते हुए तो उनका एक जाल सा बिछा दिखाई देता है। यहाँ एक विशाल रासायनिक कारख़ाना है। आस-पास के क्षेत्रों में भी कागज़, लकड़ी वग़ैरह के तरह तरह के कारख़ाने हैं।

फ्रैंकफुर्ट से जब दोनों ट्रेन में आगे बढ़े तो चाचाजी ने विनोद को बताया, "अब हम दक्षिणी जर्मनी की सीमा में प्रवेश कर रहे हैं।"

"यहाँ के लोग राइन क्षेत्र के लोगों से कुछ मुख़्तलिफ़ से लगते हैं।"

"हाँ, यहाँ के लोगों का नख-शिख उतना अच्छा नहीं। न ये बोलचाल में ही उतने अच्छे हैं। इनके स्वभाव में भी कठोरता मिली हुई है।"

रास्ते में उन्हें डार्मस्टट् (Darmstadt) का छोटा सा शहर दिखलाई पड़ा। चाचाजी को इस शहर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। एक अंग्रेज़ी समझनेवाले यात्री से पूछने पर पता चला कि इस नगर में स्लाइड रूल्स बनते हैं जो दुनिया भर के देशों को भेजे जाते हैं। यहाँ एक टैक्निकल युनिवर्सिटी भी है।

कुछ घंटों की यात्रा के बाद गाड़ी मनहाइम (Mannheim)

जा कर रुकी जहाँ नेकार नदी (Neckar river) राइन में आकर मिलती है। यह आज के ज़माने का ही एक नगर है। यहाँ पर एक देखने लायक म्यूज़ियम, पिक्चर गैलरी और बड़ी लाइब्रेरी है। हर साल ग्रीष्म ऋतु में लोग यहाँ रंग-बिरंगी पोशाक में जुलूस निकालते हैं। यहाँ ब्राउन बोवेरी (Brown Boveri) बिजली कम्पनी का सबसे बड़ा दफ्तर है।

मनहाइम दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी का सबसे बड़ा नदी-बन्दरगाह है। व्यापार और उद्योग का केन्द्र होने के साथ साथ यह सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र भी है।

दोनों ने कुछ घंटे इस नगर में बिताये और कार द्वारा यहाँ से कुछ दूर दक्षिण की दिशा में बसे हाइडेलबर्ग (Heidelberg) नगर में जा पहुँचे। इस छोटे से नगर की सुन्दरता और उसके आस-पास का प्राकृतिक दृश्य देख कर विनोद मुग्ध रह गया। जब उसने चाचाजी से नगर की सुन्दरता की बार-बार तारीफ़ की तो वे बोले, "इस नगर के बारे में यह कहावत मशहूर है कि 'मैं अपना दिल हाइडेलबर्ग में छोड़ आया हूँ।' जिस किसी ने भी एक बार यह नगर देख लिया वह और कोई दूसरा नगर पसन्द कर ही नहीं सकता।" इस नगर में एक पुराना क़िला होने के अलावा एक युनिवर्सिटी भी है जिन्हें यहाँ आनेवाले यात्री ज़रूर देखते हैं। यहाँ ग्रीष्म में पुराने किले में उत्सव मनाया जाता है जब इस पर रौशनी की जाती है। क़िले से नगर की सुन्दरता देखते ही बनती है। अमरीकन यात्री यहाँ काफ़ी तादाद में नज़र आते हैं।

यहाँ दूकानों की तड़क-भड़क देखते ही बनती है। ग्रीष्मऋतु में यहाँ नित्य रात को आतिशबाज़ी छोड़ी जाती है और जुलूस निकाले जाते हैं ताकि भ्रमणार्थियों का मन बहल सके।

९

मुस्कराती वादियाँ

नगर से दक्षिण में जानेवाली ट्रेन पकड़ने के लिए दोनों समय पर स्टेशन पहुँचे। कुछ ही देर में ट्रेन ने ब्लैक फारेस्ट (Black Forest) के क्षेत्र में प्रवेश किया। चारों ओर फर के घने और काले पेड़ ही पेड़ दिखलाई पड़ने लगे। चाचाजी ने बतलाया कि यह सारा क्षेत्र उद्योग-धंदों से पूर्ण है; ख़ास करके महीन कामकाज जैसे घड़ियाँ, जवाहरात पर खुदाई तथा लकड़ी पर नक्क़ाशी का काम इस क्षेत्र में होता है। अब गाड़ी कार्ल्सरूहे (Karlsruhe) के औद्योगिक नगर में पहुँची। पता चला कि इस नगर की विशेषता यहाँ की पँखों की तरह की सड़क-प्रणाली है। ये सड़कें यहाँ के ग्रैंड डयूक महल (Grand Duke Palace) से होकर आगे बढ़ती हैं। यहाँ के हाल ऑफ़् आर्ट (कला-संग्रहालय) में अनेक प्रसिद्ध कलाकृतियाँ देखी जा सकती हैं। यह नगर मापने के सूक्ष्म यंत्रों का केन्द्र है। यहाँ से ट्रेन आगे चली तो चाचाजी ने विनोद को बतलाया कि अब वे एक ऐसे नगर में पहुँच कर वहाँ कुछ दिन ठहरेंगे जो

यूरोप भर में अपने इर्द-गिर्द की प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है और सैर-सपाटे तथा स्वास्थ्य-लाभ का प्रमुख नगर माना जाता है। ट्रेन जब बादेन-बादेन (Baden Baden) स्टेशन पर पहुँची तो दोनों ने बहुत से टूरिस्टों को वहाँ उतरते देखा। स्टेशन से बाहर निकलने पर ट्रेन से भी कहीं ज्यादा कारों से टूरिस्ट आते-जाते दिखे। सैर-सपाटे का नगर होने के कारण यहाँ अनेक प्रकार के होटलों की कोई कमी न थी। दोनों ने एक अच्छे से होटल में एक कमरा किराए पर ले लिया।

बादेन-बादेन के बारे में विनोद को चाचाजी ने बतलाया कि हर मौसम में इसके इर्द-गिर्द प्रकृति की अद्भुत छटा देखने को मिलती है। यहाँ की जलवायु भी अनुकूल है, न अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी। होटल में नहा-धोकर खाने-पीने के बाद दोनों बाहर सैर करने निकले। अब विनोद को विश्वास हो गया कि बादेन-बादेन सचमुच ही सैर-सपाटों और मनोरंजन का केन्द्र है। यहाँ जगह-जगह उसे थियेटर दिखलाई पड़े जिनमें सिनेमा, नाटक, आपेरा, नृत्य वग़ैरह हो रहे थे। विनोद से न रहा गया, चाचाजी से बोला, "चाचाजी, क्या यहाँ वर्ष भर ऐसे ही कार्यक्रम चलते रहते हैं?"

"हाँ, तभी तो यह नगर यूरोप भर में धनी लोगों के सैर-सपाटे के नगर के रूप में जाना जाता है।"

"यहाँ आने वाले टूरिस्ट भी धनीमानी लगते हैं, तभी तो जगह-जगह फैशन शो भी हो रहे हैं।"

"हाँ, ये टूरिस्ट जर्मनी के ही नहीं, यूरोप के कई देशों से यहाँ आये हैं। किन्तु इन सब मनोरंजनों के अलावा लोगों के यहाँ आने का सबसे बड़ा कारण हैं यहाँ के गर्म पानी के झरने। इनमें पिछले दो हज़ार वर्षों से चमड़ी के रोगों को अच्छा करने वाला जल निकलता रहता है।"

"ठीक वैसे ही जैसे कि बम्बई के पास ब्रजेश्वरी के गर्म पानी के कुंड हैं?"

"हाँ, लगभग। वहाँ वे कुण्ड हैं, यहाँ ये झरने हैं; किन्तु प्रभाव दोनों का एक सा ही है। यह ज़रूर है कि यहाँ के झरनों के आस पास का दृश्य बड़ा मनोरम है और उनकी बड़ी निगरानी की जाती है।"

अगले दिन दोनों रोमरप्लट्ज़ (Roemerplatz) के गर्म पानी के झरनों को देखने गये; वहाँ दोनों ने बड़े मजे में स्नान किया। ऐसे स्नान का आनन्द विनोद को कई सालों से नहीं आया था। वापस लौटते समय उन्हें जगह जगह अंगूर की लताएँ मिलीं। ब्लैक फारेस्ट के क्षेत्र में जगह जगह आदर्श पिकनिक-स्थल थे। कुछ दूर पर विनोद को बम्बई के महालक्ष्मी के घुड़दौड़ के मैदान जैसा एक मैदान दिखा। पूछने पर चाचाजी ने बताया कि यह यहाँ का घुड़दौड़ का मैदान है। यहाँ की घुड़दौड़ प्रसिद्ध है। जो लोग सैर-सपाटे के लिए यहाँ आते हैं उन्हें ऐसे मनोरंजनों की ज़रूरत होती है। दूसरे वे ऐसे 'मूड' में होते हैं कि कुछ रुपए खोने में उन्हें कोई एतराज़ नहीं होता। पर यहाँ यह एक व्यसन

से अधिक खेल का अंग समझा जाता है। लोगों के रहन-सहन का स्तर इतना ऊँचा है कि व्यसन होने पर भी यह यहाँ उतना नहीं खटकता जितना कि हमारे देश में।

"हाँ, मैंने बम्बई में कई ऐसे लोगों को महालक्ष्मी की रेस में जाते देखा है जो मुश्किल से दो वक़्त का खाना जुटा सकते होंगे।"

"इसीलिए तो हमारे देश में समय समय पर घुड़दौड़ों पर रोक लगाने की माँग उठा करती है।"

दोनों का आज का कार्यक्रम क़ाफी लम्बा रहा। इसलिए रात को वे कहीं नहीं गये। अगले दिन सबेरे नाश्ते के बाद दोनों फिर घूमने निकले। सैर-सपाटे के अलावा उन्होंने कुछ वस्तुएँ भी खरीदीं।

"आज रात को मैं तुम्हें एक अजीब नज़ारा दिखलाऊँगा जिसे देख कर तुम्हारी तबीअत खुश हो जायेगी।" चाचाजी ने दोपहर को भोजन के समय विनोद से कहा।

"वह क्या?" विनोद ने उत्सुकता से पूछा।

"तुम बताओ, क्या हो सकता है? ऐसी मौज-मज़े की जगह में जहाँ सब सैर-सपाटा करने आए हों, वह कोई ऐसी ही चीज़ हो सकती है जो समूचे वातावरण में खुशी पैदा कर दे। सबके दिल जिससे खुश हो उठें।

"मैं तो अंदाज़ा नहीं लगा पा रहा हूँ।"

"अच्छा यह बताओ कि हमारे देश में लोग जब बहुत-खुश हो उठते हैं, तो क्या करते हैं?"

"मिठाई खाते हैं—"

"ठीक—तुम्हें मिठाई ही पहले याद आयेगी! यह तो सिर्फ़ खाने-पीने की बात हुई। अपनी खुशी को किस तरह प्रकट करते हैं?"

"ओह, अब समझा। रोशनी करते हैं, आतिशबाज़ी छोड़ते हैं।"

"बिल्कुल ठीक। आज रात को मैं तुम्हें आतिशबाज़ी का नज़ारा दिखलाऊँगा।"

"वाह वाह, यह तो बड़े मज़े की बात आपने सुनाई चाचाजी। सचमुच इस जगह इसी चीज़ की कमी थी।"

रात को दोनों ने आतिशबाज़ी छोड़ी जाती देखी। विनोद को यहाँ की आतिशबाजी देख कर लगा मानों वह किसी परियों के देश में आ गया हो। ऐसी सुन्दर जगह में हंसी-खुशी के बीच जब आतिशबाज़ी छोड़ी जाती है तो उसका पूरा आनन्द आ जाता है। विनोद को यह स्थान छोड़ते हुए बड़ा दुख हुआ। यहाँ उसने सैरसपाटे का पूरा आनन्द लिया था। किन्तु चाचाजी ने बतलाया कि कुछ दूर आगे चल कर उन्हें दक्षिण की दिशा में एक ऐसा ही दूसरा नगर मिलेगा जो परीभूमि का सुन्दर नगर कह कर पुकारा जाता है। स्वाभाविक ही था कि विनोद इस जगह का नाम उत्सुकता से पूछता। चाचाजी ने बतलाया कि इस नगर का नाम फ्रायडेनस्टट् (Freudenstadt) है।

अगले दिन दोनों एक कार में इस परीभूमि के नगर में पहुँचे। यह भी ब्लेक फारेस्ट के क्षेत्र में ही स्थित है। चाचाजी ने बतलाया

कि दूसरी बड़ी लड़ाई में यह नगर पूरी तरह नष्ट कर दिया गया था। विनोद को यह सुन कर सहसा विश्वास नहीं हुआ। यहाँ की भव्य इमारतें देख कर कोई नहीं कह सकता कि ये खंडहरों पर खड़ी की गई होंगी।

इस नगर और बादेन-बादेन में विनोद को बड़ी समानता दिखलाई पड़ी। बादेन-बादेन की ही तरह यह भी खेल-कूद और मनोरंजन का केन्द्र है। कुछ लोग स्वास्थ्य-लाभ के लिए भी यहाँ आते हैं। यहाँ आनेवाले सैलानी भी न केवल यूरोप से बल्कि बाहरी देशों से भी आये थे। जगह-जगह भ्रमणार्थी उसे गोल्फ और टेनिस खेलते मिले। कुछ तैराकी कर रहे थे तो कुछ मछली मार रहे थे। चाचाजी ने बतलाया कि शरद् ऋतु में यहाँ पर बर्फ पर स्काइंग, स्केटिंग करने में बड़ा आनन्द आता है। इनके लिए लगभग ३५ किलोमीटर जगह सुरक्षित रखी गई है। यही नहीं, घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली स्लेज गाड़ियाँ भी यहाँ उपलब्ध हैं। भ्रमणार्थी ताज़ा और प्रसन्नचित्त हो कर यहाँ से वापस लौटता है। विनोद को यह परीनगर छोड़ते हुए काफ़ी दुख हो रहा था, किन्तु यात्रा तो जारी रखनी ही थी।

१०

संस्कृति के रखवाले

अगले दिन दोनों यहाँ से ट्रेन में स्टुटगार्ट (Stuttgart) के लिए रवाना हुए। चाचाजी ने बतलाया कि यह नगर जंगलों और अंगूरलताओं के खेतों के बीच बसा होने से प्रकृति की सुन्दरता से भरपूर है। वैसे तो यह एक काफ़ी पुराना नगर है किन्तु दूसरी बड़ी लड़ाई में इस पर इतनी बमबारी की गई कि नए-नए मकान बन जाने से अब यह बिलकुल नया नगर मालूम पड़ता है। ऐतिहासिक नगर होने के कारण कई महल यहाँ टूटी-फूटी हालत में आज भी खड़े हुए पाये जाते हैं।

नगर जब क़रीब आ गया तो इसकी प्राकृतिक छटा ने सचमुच ही विनोद का मन मोह लिया। वह बोला, "चाचाजी, इस नगर के तो चारों ओर ही पहाड़ियाँ लगती हैं, हैं न?"

चाचाजी ने जवाब दिया, "हाँ, और उन पहाड़ियों पर ही यहाँ के कई अच्छे अच्छे रेस्टारैन्ट हैं। लोग यहाँ घूमने और सैर-सपाटे के लिए आते हैं और घंटों यहीं बैठे रहते हैं।"

"तब तो हम भी ज़रूर चलेंगे।"

"ज़रूर।"

ट्रेन से उतर कर दोनों एक होटल में पहुँचे। होटल काफ़ी अच्छा और आरामदेह था। दोपहर के भोजन के बाद दोनों नगर देखने निकले। विनोद ने कई जगह ऊँची ऊँची चिमनियां देख कर पूछा, "चाचाजी, क्या ये कपड़े बनाने की मिलें हैं?"

"हाँ, किन्तु बम्बई की तुलना में बहुत कम हैं। इस उद्योग के अलावा यहाँ रसायन द्रव्य बनाने के कारख़ाने भी हैं।"

"तब तो शायद और नगरों की तरह यहाँ टेक्निकल युनिवर्सिटी भी हो।"

"हाँ, पर यह नगर छापेखानों के लिए सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। सुप्रसिद्ध डैमलर-बेन्ज़ और पोर्शे कारें और ट्रक भी यहीं बनते हैं। यहाँ का पुस्तक-मेला बहुत बड़ा माना जाता है।"

"तब तो यहाँ कोई बहुत बड़ा पुस्तकालय भी होगा।"

"हाँ, वह देखो यहाँ का पुस्तकालय दिखाई दे रहा है। किसी ज़माने में इसमें बाइबिल की ही सात हज़ार प्रतियाँ रखी रहती थीं।" चाचाजी ने बताया कि हर साल यहाँ एक बड़ा मेला भी लगता है जिसमें आसपास के लोग उत्साह से भाग लेते हैं। संगीत के कार्यक्रम तो यहाँ साल भर चलते रहते हैं।

कुछ देर में दोनों शहर से बाहर एक बड़े पार्क के क़रीब जा पहुँचे जिसके बीच में एक बहुत ऊँचे टावर को दूर से देख कर विनोद को लगा था कि वह कोई मीनार है। चाचाजी ने बतलाया कि

यह टेलीविज़न टावर (Television Tower) है और इसके कारण इस पार्क का नाम टेलीविज़न टावर पार्क पड़ा है। इस टावर की ऊँचाई ६८९ फुट है। स्टुटगार्ट की सैर के लिए आये हुए लोगों के लिए यह पार्क सबसे बड़ा आकर्षण है।

दोनों ने इस टावर पर चढ़ कर समूचे स्टुटगार्ट शहर को देखा। टेलीविज़न का ज़िक्र आ गया तो इस टावर पर आये हुए एक अंग्रेजी बोलनेवाले जर्मन ने बतलाया कि जर्मन टेलीविज़न जाल रोज़ कुल मिला कर ४ घंटे का कार्यक्रम पेश करता है। यह कार्यक्रम जर्मन ब्राडकास्टिंग स्टेशनों (German Broadcasting Stations) द्वारा प्रसारित किये जाते और समूचे देश में देखे जा सकते हैं। अनुमान है कि १६-१७ लाख लोगों ने टेलीविज़न के लाइसेन्स ले रखे हैं। जर्मन टेलीविजन ६२५ लाइन प्रणाली पर काम करते हैं। इसका यह मतलब हुआ कि एक कार्यक्रम को एक स्टुडियो से दूसरे स्टुडियो में बदला जा सकता है। इनके द्वारा अनेक मनोरंजक कार्यक्रम, नाटक, ऑपेरा और डॉक्युमेन्टरी रिपोर्ट (Documentary Report) पेश किए जाते हैं। यही नहीं, बल्कि महत्त्वपूर्ण राजनैतिक, सांस्कृतिक और खेलकूद सम्बन्धी घटनाओं को भी बाहर के देशों से टेलीविजन द्वारा जर्मनी में और यहाँ की ऐसी घटनाओं को पास के दूसरे देशों में दिखाने का भी इन्तिज़ाम है। ज़्यादातर घटनाएँ खेल-कूद सम्बन्धी ही होती हैं।

यहाँ से दोनों एक ऐसे पार्क में पहुँचे जिसमें फूल ही फूल थे।

इसमें बच्चों की सैर के लिए एक गाड़ी चल रही थी, जिसमें विनोद ने सैर की।

अब दोनों ने दक्षिण-पूर्व का सफ़र कार में एक हाइवे पर शुरू किया ताकि आस-पास के सुन्दर वन्य प्रदेश को अच्छी तरह से देखते हुए यात्रा की जा सके। दूसरा कारण यह था कि लगभग ५८ मील दक्षिण जा कर फिर उन्हें उत्तर की दिशा में ही वापस लौटना था। स्टुटगार्ट से चलने के लगभग डेढ़ घंटे के बाद विनोद को एक बहुत ऊँचा टावर दिखलाई पड़ा। उसने चाचाजी से पूछा, "चाचाजी, कुछ दूर पर एक बहुत ऊँचा टावर है। इतना ऊँचा टावर तो मैंने आज तक कहीं नहीं देखा।"

"हाँ, यह उल्म (Ulm) नगर का कैथेड्रल टावर (Cathedral Tower) है। दुनिया में यह सबसे ऊँचा टावर माना जाता है।"

अब कार नगर के क़रीब आ गई। उल्म छोटासा किन्तु पुराना नगर है जो डेन्यूब (Danube) नदी के किनारे पर बसा हुआ है, यहाँ उसकी दो सहायक नदियाँ उसमें आकर मिलती हैं। नगर में १६ वीं शताब्दि का बना हुआ एक पुराना टाउन हाल भी है।

उल्म और उसके आसपास के लोग दीखने में बड़े रूखे से लगे, उनकी बनावटमें भी कोई विशेषता नहीं दिखलाई पड़ी। विनोद ने दो एक लोगों से कुछ बातें करनी चाहीं, किन्तु उसे लगा कि उनकी भाषा भी जर्मनी के दूसरे भागों से कुछ अलग सी है।

कुछ घंटे और ठहर कर दोनों यहाँ से कार में उत्तर की ओर रवाना हुए। विनोद को कुछ अचरज हुआ, पूछा, "चाचाजी, हम दक्षिण-पूर्व की ओर सफर करके अब फिर उत्तर की ओर क्यों जा रहे हैं?"

"असल में स्टुटगार्ट से ही हमें उत्तर-पूर्व की दिशा में चलना चाहिए था ताकि हम अपनी यात्रा के इस आख़िरी दौर में तीन और नगरों को देख लेते। किन्तु उल्म के इतने क़रीब होने पर मैंने सोचा कि वहाँ भी हो आया जाए।"

विनोद को एक विचार सूझा और उसने चाचाजी से पूछा, "चाचाजी, वैसे तो हम अब तक यहाँ के ज़्यादातर नगर देख चुके हैं। सब एक दूसरे से बहुत सी बातों में मिलते हैं। किन्तु क्या यहाँ कोई ऐसा नगर भी है, जिसे हम पूरे जर्मनी की पुरानी संस्कृति का जीता-जागता नमूना मान सकें।"

"यह सवाल तुमने बड़े अच्छे मौक़े पर पूछा है, ख़ास करके जब हम एक ऐसे ही नगर को चलने वाले भी हैं। मेरा मतलब रोथेनबुर्ग (Rothenburg) से है।"

रोथेनबुर्ग के छोटे से नगर में प्रवेश करने के लिए उसकी बाहरी दीवार के फाटक से होकर गुज़रना पड़ा। नगर की बाहरी दीवार ठीक उसी तरह है जैसी कि आज भी कई पुराने भारतीय नगरों के चारों ओर देखी जा सकती है। फ़र्क़ इतना ही था कि हमारे यहाँ की ये चार दीवारियाँ बहुत कुछ टूट-फूट चुकी हैं, और रोथेनबुर्ग की चहारदीवारी बहुत कुछ अंशों में जैसी की तैसी बनी हुई है।

चाचाजी ने बताया कि उसको ज्यों का त्यों सुरक्षित रखन के लिए काफ़ी कोशिश की जाती है।

नगर की सँकरी गलियों को देख कर विनोद को दिल्ली की याद आ गई। उसे यह देख कर कुछ अचरज भी हुआ कि वे अब भी ज्यों की त्यों हैं, खासकर ऐसे देश में जहाँ नित नवीन नगर बन रहे हैं और जहाँ दूसरी लड़ाई में खंडहर बना दिए गए नगर आज आधुनिकतम नगर के रूप में खड़े हैं।

आखिर उसे चाचाजी से पूछना ही पड़ा, "चाचाजी, जर्मन लोग तो मेहनती हैं, दूसरी लड़ाई के बाद देखते ही देखते उन्होंने एक से एक बड़े और आधुनिक नगर खड़े कर लिए। यहाँ हमारे देश की तरह ग़रीबी भी नहीं है। फिर भी ये पुराने क़िस्म के मकान, संकरी गलियाँ ज्यों की त्यों क्यों खड़ी हैं?"

"इसका कारण तुम पहले अपने मुँह से कह चुके हो। फिर भी सुन लो। जर्मन लोग पुरानी संस्कृति के नमूने को ज्यों का त्यों रखने में विश्वास रखते हैं और गर्व का अनुभव करते हैं। वे चाहते हैं कि उनके देश में कम से कम दो-तीन नगर तो ऐसे हों ही जो उन्हें पुराने वैभव और संस्कृति की याद दिलाते रहें। रोथेनबुर्ग उनकी निगाह में ऐसा ही एक नगर है।"

"कितना पुराना है यह नगर?" विनोद ने उत्सुकता से पूछा।

"लगभग दो हज़ार वर्ष पुराना। यह यूरोप का सबसे पुराना नगर माना जाता है। जो इमारतें तुम आज खड़ी देख रहे हो इनमें से बहुत सी अठारहवीं शताब्दि की हैं।" चाचाजी बोले।

"अच्छा, लेकिन चाचाजी, यह अचरज की बात है कि जब दूसरे जर्मन नगर दूसरी लड़ाई में नष्ट-भ्रष्ट हो गए, कई खंडहर बना दिये गए, तब भी यह अछूता ही रह गया।"

"इसमें अचरज की कोई बात नहीं। लड़ाई के ज़माने में लड़ाई के अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार ऐसे नगरों पर बमबारी नहीं की जाती जो विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक या धार्मिक हों। उद्योगधंदों और युद्ध के केन्द्र समझे जानेवाले नगरों पर ही बमबारी करने से लड़ाई जीतने में मदद भी मिलती है।"

"लेकिन लड़ाई तो लड़ाई है, कोई इन नियमों को न माने तो?"

"यह दूसरी बात है। किन्तु ऐसे पक्ष की दुनिया भर के लोग निन्दा किये बग़ैर नहीं रहते। लड़ाई में ज़्यादा लोगों की सहानुभूति पाने के लिए दोनों पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करते हैं। पिछली लड़ाई में मित्रराष्ट्रों ने ऐसे कितने ही नगरों पर बमबारी नहीं की। कोलोन के बारे में मैं तुम्हें बतला ही चुका हूँ।"

पहाड़ी पर बसे हुए इस छोटे से नगर में पहुँच कर दोनों एक साधारण से होटल में चाय पीने के लिए ठहरे। विनोद को यह देखकर अचरज हुआ कि उस होटल के बर्तन तक पुराने ज़माने ही की शैली के बने हुए थे। वह चाचाजी से बोला, "कितने अचरज की बात है कि यहाँ के लोग छोटी-छोटी बातों में भी अपनी संस्कृति को नहीं भूले हैं। हमारे देश में कितने ऐसे नगर हैं जो देश की संस्कृति के जीते-जागते नमूने कहे जा सकते हैं और जहाँ छोटी-छोटी बातों में भी उनका ध्यान रखा जाता हो?"

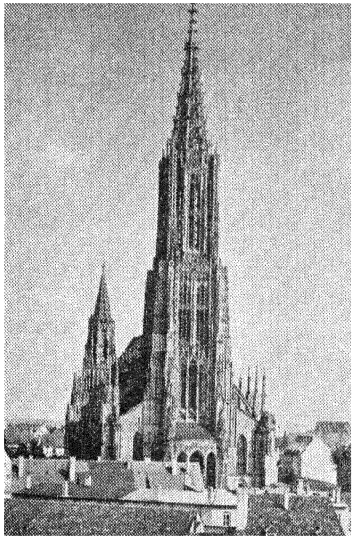

उल्म का चर्च जो विश्व के ऊँचे चर्चों में एक मानी जाती है

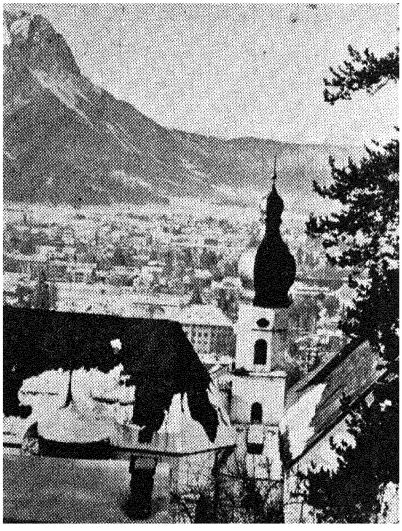

गार्मिश पारटेनकिरशेन नगर में बर्फ़ का दृश्य

म्यूनिक का
टाउनहाल
टावर
→

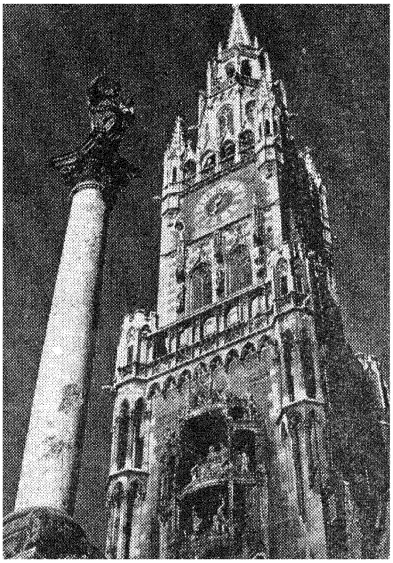

ऊपर : एक ब
शहर में ज़मीन
ऊपर चलने वा
'मोनोरेल

नीचे : 'मोनोरेल
का भीतरी भा

म्यूनिक का मैक्स
मुलर राजमार्ग ↓

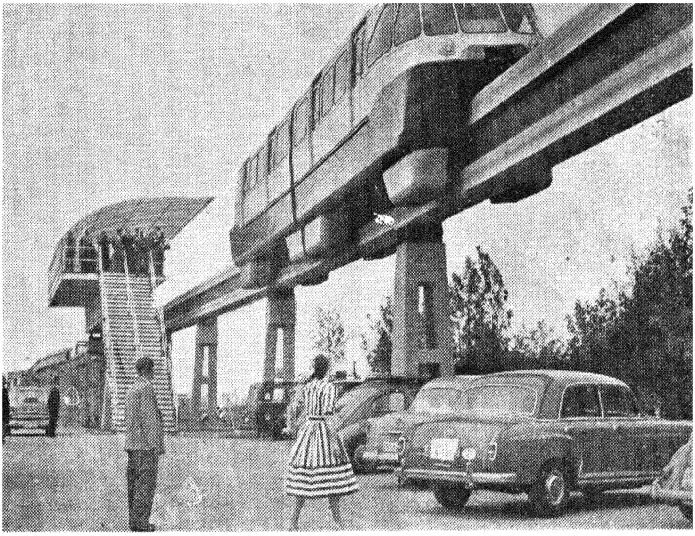

मज़दूरों के
निवास के
लिए नये घर
→

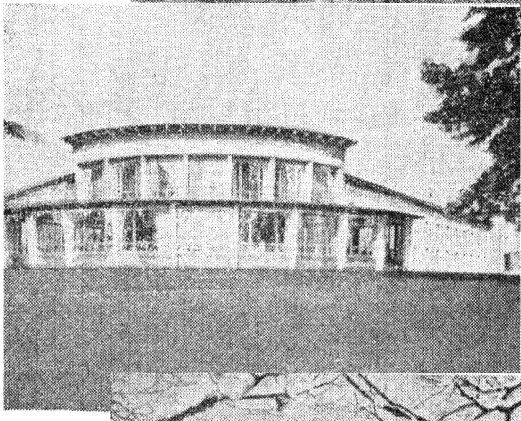

पूर्वी और पश्चिमी
बर्लिन की सीमा
पर स्थित
'ब्रेन्डिनबर्ग गेट'
—

←बूढ़े व्यक्तियों
के लिए सरकार
द्वारा निर्मित घर

जर्मन निवासी बैल
नृत्य में निपुण हैं —

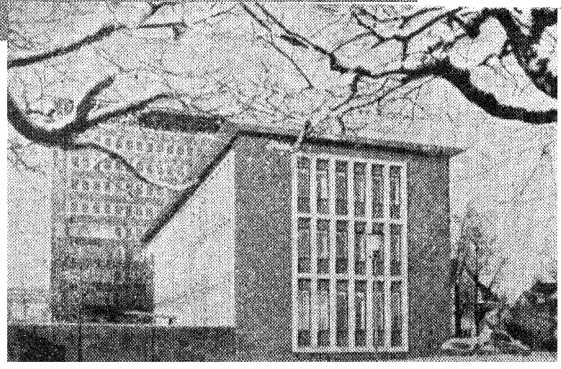

जर्मनी का
एक
पॉलीक्लेनिक
→

Achtung!
Sie verlassen
nach 40 m
West-Berlin

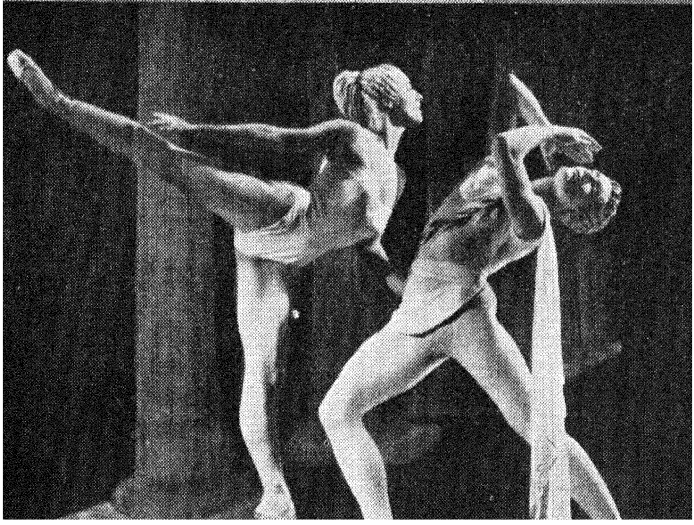

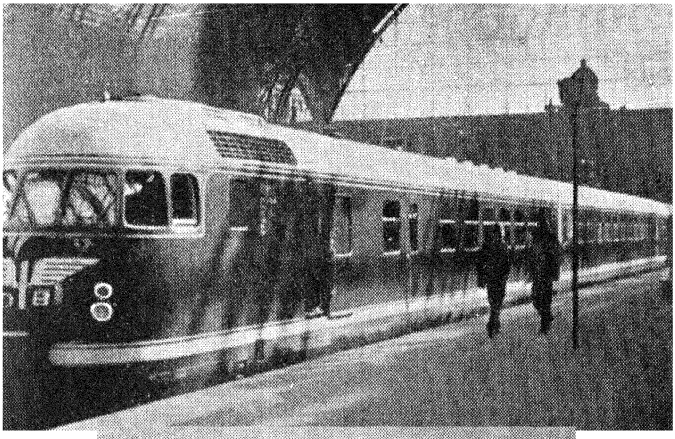

↑ मर्सीडीज़-बेन्ज़ डिज़िल इंजन से चलने वाला जर्मनी का एक रेलकार

← बर्फ़ में बस की यात्रा

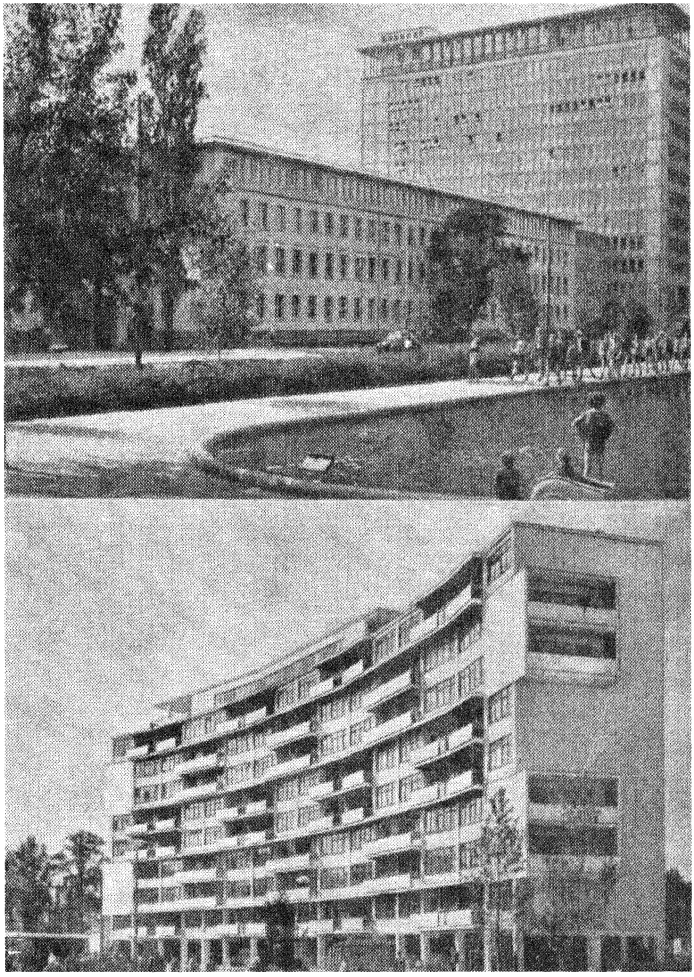

ऊपर : फ्रैंकफुर्ट में रेलवे का प्रधान कार्यालय

नीचे : बर्लिन में लोगों के लिए नये घर

किन्डरगार्टन स्कूल

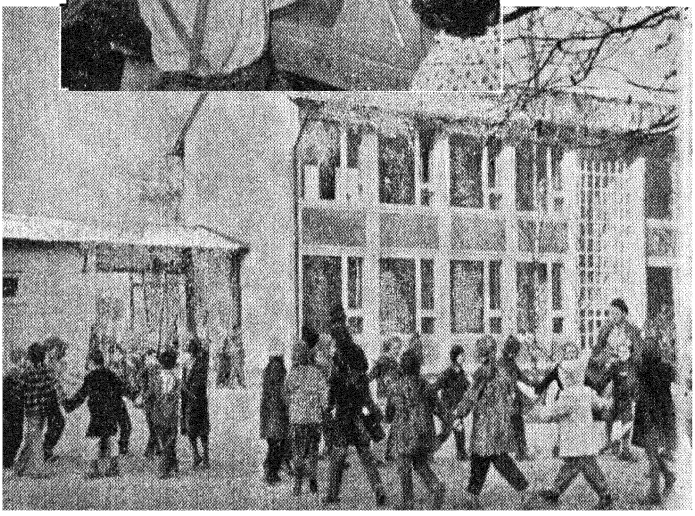

सरद ऋतु में खुले मैदान में खेल का आनंद

"यही तो जर्मनों की विशेषता है। किन्तु ध्यान रखो विनोद कि जब यह चीज़ एक हद से बढ़ जाती है, तब ऐसे लोग दूसरे देशों के निवासियों को अपने से नीचा समझने लगते हैं और समूचे राष्ट्र को उसका फल भोगना पड़ता है। यही हाल हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी का हुआ था। इस चीज से बचने के लिए हमारे प्रधान मन्त्री नेहरूजी सावधान किया करते हैं।"

नगर में उन्हें अनेक टूरिस्ट दिखलाई पड़े, जो न केवल जर्मनी बल्कि यूरोप के कई देशों से आये हुए थे। दो-चार एशियाई भी नज़र आये। चाचाजी ने बतलाया कि हर साल जून के महीने में यहाँ एक ऐतिहासिक झाँकी निकला करती है, जिसे देखने दूर-दूर से लोग यहाँ आया करते हैं।

११

खण्डहरों की दुनिया

चाय पीकर कुछ देर सुस्ता लेने के बाद यहाँ से कार द्वारा दोनों ने पूर्व की दिशा में यात्रा जारी रखी। चाचाजी ने बतलाया कि अब वे नूरंबर्ग (Nuernberg) जा रहे हैं। विनोद को यह नाम कुछ परिचित सा लगा, किन्तु यह याद न आया कि किस सिलसिले में उसने नूरंबर्ग का नाम बार-बार सुना था। उसको सोचते देख कर चाचाजी ने पूछा "क्यों विनोद, क्या सोच रहे हो?"

"यही सोच रहा हूँ कि कहीं मैंने नूरंबर्ग का नाम बार-बार पढ़ा है, किन्तु याद नहीं आ रहा कि किस सिलसिले में?"

"यह वह नगर है जिसमें दूसरी लडाई में जर्मनी के हार जाने के बाद नाज़ियों पर मुक़दमा चलाया गया था।"

"ओह, ठीक है, ठीक है। तभी तो मैं सोच रहा था कि यह नाम बार-बार मैंने किस सिलसिले में पढ़ा है।"

रोथेनबुर्ग से नूरंबर्ग तक का रास्ता हरे-भरे प्रदेश में से होकर था।

जर्मनी का यह नगर बवेरिया (Baveria) नामक प्रांत में स्थित है। अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, भव्य महलों, क़िलों और चर्चों के लिए तो यह अति प्रसिद्ध है ही, यहाँ के लोग भी खुशमिज़ाज और हंसी-खुशी में ज़िन्दगी बितानेवाले हैं। इन्हें पुराने रीति-रिवाजों, संगीत और नृत्य से बड़ा प्रेम है। नाटक तो यहाँ के लोगों के जीवन का एक अंग ही बन गया है। यह प्रदेश कलाकारों की भूमि रहा है और आजकल अपनी व्यापारिक और औद्योगिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की व्यापारिक कम्पनियाँ संसार भर के देशों को खिलौने, शराब, शीशे की वस्तुएँ, वाद्य यंत्र और नक़्क़ाशी की हुई लकड़ी और पेन्सिलें वग़ैरह भेजती हैं। यह प्रदेश मनोरम घाटियों के अलावा आल्पाइन (Alpine) पर्वत के लिए प्रसिद्ध है जिसकी तलहटी में बसे नगर भ्रमणार्थियों का साल के हर महीने में एक सा मनोरंजन करते हैं।

शहर में प्रवेश करते समय विनोद ने देखा कि उसकी चहार-दीवारी आज ज्यों की त्यों है। नूरंबर्ग नगर देख कर विनोद को कुछ हैरानी भी हुई। नगर में सुन्दर आधुनिक इमारतों के साथ अनेक टूटी-फूटी इमारतें भी खड़ी थीं, किन्तु लगता था कि वे समय के कारण पुरानी होकर नहीं ढही हैं, बल्कि उन पर ज़बर्दस्त प्रहार करके उन्हें तोड़ा गया है। चाचाजी ने उसे बतलाया, "जर्मनी के नगरों में से सबसे भयानक बमवर्षा इस पर की गई थी। २ जनवरी १९४५ की रात, इस नगर में 'आतंक की रात' के रूप में हमेशा याद रखी जाएगी। नगर के जलने का खौफ़नाक

दृश्य १३ किलोमीटर (८ मील) दूर से दिखलाई पड़ता था। इस एक रात में ही यह नगर मित्रराष्ट्रों के हवाई जहाज़ों की बमवर्षा से खंडहर बना दिया गया। वह भयानक रात इस नगर का कोई निवासी आज तक नहीं भुला पाया है।"

"शायद इस नगर से हिटलर को लड़ाई के लिए बड़ी मदद मिल रही थी।"

"हाँ, यहाँ पर जर्मन फौजों का बड़ा अड्डा था, जहाँ हिटलर नाज़ी सिपाहियों के परेड की सलामी लिया करता था। उसका स्मारक आज भी खड़ा है।" उन्होंने कहा।

होटल के रास्ते में उन्हें जगह जगह पर खिलौनों की दूकानें दिखलाई पड़ीं। चाचाजी ने बतलाया कि नूरंबर्ग में खिलौने बनाने का बहुत बड़ा मेला लगा करता है। क्रिसमस में भी बड़ा भारी मेला लगता है जिसमें तरह तरह की चीजें बिकती हैं। यहाँ पर बिजली के सामान और चश्मे बनाने के कई कारख़ाने हैं।

रात को दोनों एक मित्र के घर भोजन करने के लिए गए। वहाँ बातचीत के दौरान विनोद ने अनुभव किया कि जर्मनों को अपनी संस्कृति पर कितना गर्व है। उसे नेहरूजी की वह चेतावनी भी याद में आई कि अपनी संस्कृति का इतना गर्व मत करने लग जाओ कि दूसरों के लिए तुम्हारे दिल में घृणा पैदा हो जाय। लौटते समय जब उसने चाचाजी से इस बात का ज़िक्र किया तो उन्होंने बतलाया कि आज का जर्मनी पहले के जर्मनी की अपेक्षा बहुत कम अहंकारमय रह गया है। लोगों के हृदय और

मस्तिष्क अब जनतंत्र के ढाँचे में ढलने लगे हैं।

अगले दिन दोनों उसी मित्र को लेकर नगर के ऐतिहासिक स्थान देखने निकले। शहर के एक कोने पर उन्होंने एक इमारत अर्धनिर्मित हालत में भी शान से खड़ी देखी। जर्मन मित्र ने बताया कि इस इमारत को बनाने का काम जर्मनी के तानाशाह एडोल्फ हिटलर ने शुरू किया था, किन्तु रुपयों की कमी के कारण वह इसे पूरी तरह से न बनवा पाया। आगे चल कर उन्होंने वह जगह भी देखी जहाँ हिटलर नाज़ी परेड की सलामी लिया करता था। यहाँ का प्रसिद्ध चर्च दिखला कर मित्र ने बताया कि इसे यूरोप निवासी बहुत पवित्र मानते हैं। उसके सामने ही एक १७ वीं शताब्दि का बना हुआ सुन्दर फव्वारा भी विनोद ने देखा। उसे बतलाया गया कि उस पर सोने की पर्त लगी हुई है। जर्मनों ने दूसरी लड़ाई में इसकी रक्षा करने में सफलता पाई। जर्मन मित्र ने एक मनोरंजक बात बतलाई कि यहाँ के सोने के छल्ले को घुमा कर लोग अपनी मनोकामना पूरी होने की प्रार्थना करते हैं और वह पूरी हो कर रहती है, ऐसा उनका विश्वास अब तक बना हुआ है। मित्र ने बताया कि हर साल नगर में संगीत के विशेष जल्से हुआ करते हैं।

उन लोगों ने यहाँ वह मकान देखा जिसमें प्रसिद्ध जर्मन कलाकार आलब्रेश्ट डयूरर (Albrecht Duerer) के चित्रों का प्रदर्शन किया गया है। डूरर इसी नगर के निवासी थे। अन्त में उन्होंने यहाँ का वह पुराना क़िला भी देखा जिस पर इस नगर का नाम नूरंबर्ग

पड़ा है। जर्मन ने बताया कि इसी नगर के पास सुप्रसिद्ध इंजीनियरिंग कम्पनी सीमेन्स (Siemens) का प्रधान कार्यालय भी है। मित्र को धन्यवाद देकर दोनों ने विदा ली और अगले दिन उनकी ही कार में यहाँ से उत्तर में बँम्बर्ग को (Bamberg) रवाना हुए। वापस नूरंबर्ग लौटकर उन्हें सुप्रसिद्ध जर्मन नगर म्यूनिक (Munich) की ओर रवाना होना था।

किसी ज़माने में बँम्बर्ग को जर्मनी का रोम कहा जाता था। पुराने ज़माने में यह नगर और इसके इर्द-गिर्द का क्षेत्र एक स्वतंत्र राज्य था। धार्मिक नगर होने से यहाँ की इमारतों पर भी भव्य नक्काशी देखते ही बनती थी। यहाँ से कुछ दूर पर प्रसिद्ध होली चर्च आफ फोरटीन सेन्ट्स (Holy church of fourteen saints) भी स्थित है। बँम्बर्ग में अधिक समय न रहकर दोनों फ्रांकेनियन स्थित स्विट्ज़रलैण्ड के पर्वतीय प्रदेश की अद्भुत छटा को देखते हुए मित्र की कार में नूरंबर्ग लौट आए और वहाँ से एक भाड़े की कार में आगे रवाना हुए। म्यूनिक के रास्ते में उन्हें रेगेंसबुर्ग (Regensburg) नगर मिला जो अपने पुराने कैथेड्रल के लिए प्रसिद्ध है।

*

१२

सांस्कृतिक नगर : म्यूनिक

कुछ घंटों के सफ़र के बाद वे आटोवेहेन के बड़े राजमार्ग से बवेरिया की राजधानी म्यूनिक (Munich) पहुँचे। यह नगर डेन्यूब की एक सहायक नदी ईज़ार (Isar) के तट पर बसा हुआ है। जर्मनी में सबसे अधिक भ्रमणार्थी इसी नगर में आते हैं क्योंकि इसके पीछे अच्छे पर्वतीय प्रदेश तथा अन्य कई देशों की सीमाएँ हैं। विनोद यह जानता था कि म्यूनिक जर्मनी के बड़े नगरों में से एक है और यहाँ का कला-संग्रहालय विशाल और संसार भर में प्रसिद्ध है। इसमें पश्चिमी जर्मनी की सबसे महत्वपूर्ण वस्तुएँ सुरक्षित रखी हुई हैं। यहाँ के पुस्तकालय में लगभग २५ लाख पुस्तकें हैं। पश्चिमी जर्मनी का यह सबसे बड़ा पुस्तकालय है। चाचाजी ने बतलाया कि यहाँ एक मेला हुआ करता है जिसमें लोग तरह-तरह की स्थानीय पोशाकें पहन कर जुलूस में चलते हैं। वह दृश्य देखने योग्य होता है। म्यूनिक के क़रीब पहुँचने पर उसने चाचाजी से पूछा, "चाचाजी, यह नगर तो बहुत पुराना होगा?"

"हाँ!"

"क़रीब क़रीब कितना?"

"१९५८ में इसके नौ सौ वर्ष पूरे हुए।"

"तब तो यहाँ पुराने चर्च और इमारतें भी होंगी।"

"हाँ, इनके अलावा यहाँ का पुराना राजमहल और तरह तरह के बगीचे देखकर तुम खुश हो जाओगे। किसी ज़माने में इसमें बवेरिया के राजा रहा करते थे।"

सचमुच ही पुराने राजाओं के महल देख कर विनोद ख़ुश हो गया। ये महल उसे अपने देश के पुराने राजाओं और मुग़ल बादशाहों के महलों के सामने नहीं जंचे। किन्तु यहाँ का कला-संग्रहालय और साइन्स म्यूज़ियम (Science Museum) देख कर वह खुश हो उठा। इस म्यूज़ियम में विज्ञान की प्रगति के चरण दिखलाए गए हैं और अपने ढंग का यह निराला म्यूज़ियम है। चाचाजी ने बतलाया कि म्यूनिक वैज्ञानिक औज़ार बनाने के लिए भी प्रसिद्ध है। शहर में अनेक स्थानों पर शराब की दूकानें देख कर विनोद ने अनुमान लगाया कि बियर बनाना यहाँ के लोगों की जीविका का मुख्य साधन है। एक अंग्रेजी बोलनेवाले जर्मन ने उसे बतलाया कि यहाँ की बियर दुनिया भर में प्रसिद्ध है। हर मई में यहाँ दस्तकारी की चीज़ों का मेला लगा करता है।

दोनों इस नगर में २-३ दिन ठहरे। म्यूनिक जर्मनी का सांस्कृतिक केन्द्र है। इसमें कितने ही थियेटर तथा आपेरा हाल हैं। कला का केन्द्र होने के कारण अनेक कलाकार भी यहीं रहते हैं।

यहाँ उन दोनों ने विजय स्तम्भ (Victory Tower) और बवेरिया की मूर्ति (Statue of Bevaria) भी देखी। इस मूर्ति तक चढ़ कर इसकी आँखों में से सारा नगर देख कर विनोद को बड़ा आनन्द आया।

यहाँ सेन्ट पीटर (St. Peter) का प्रसिद्ध चर्च भी उन लोगों ने देखा। लड़ाई के ज़माने में नष्ट हुआ रेल्वे स्टेशन भी अभी ज्यों का त्यों सुरक्षित देख कर तो दोनों हैरान रह गये। म्यूनिक में जगह जगह ट्रामें देख कर पता चला कि यहाँ ज़्यादातर लोग ट्राम से यात्रा करते हैं। नगर में जगह, जगह संगमरमर की मूर्तियाँ खड़ी दिखीं, जिनको फव्वारों का रूप दे दिया गया था।

अब उनकी जर्मनी की यात्रा ख़त्म होने के नजदीक थी। चाचाजी को अपनी कम्पनी का कुछ काम भी यहाँ करना था। इस बीच विनोद अपनी उम्र के दो अंग्रेज़ी जाननेवाले विद्यार्थियों से मेल-जोल बढ़ा चुका था। वे अक्सर होटल में उसके कमरे में आया करते और उससे भारत के बारे में प्रश्न किया करते थे। उन्होंने उसे एक दिन यहाँ की सुप्रसिद्ध युनिवर्सिटी में बुलाया। यहाँ के कई आधुनिक और बड़े कारखाने तथा मुख्य बाजार देख कर विनोद को म्यूनिक की महानता को मानना ही पड़ा। स्टाउस (Stachus) नामक ट्रैफ़िक केन्द्र को भी उसने देखा, जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि इससे बड़ा ट्रैफिक प्वाइंट संसार के किसी भी नगर में नहीं है।

वहाँ उन लोगोंने उसे बतलाया कि संसार में जर्मनी ने ही

सर्वप्रथम लोकतंत्र प्रणाली पर स्कूलों की स्थापना की है। यह १८ वीं शताब्दि की बात है। १९२० से ही जर्मनी में अनिवार्य शिक्षा लागू की गई है। छठे वर्ष के अन्त से लेकर १८ वें वर्ष तक में से कम से कम ५ वर्ष स्कूल में ही बिताने होते हैं। देश भर में लगभग ८० प्रतिशत विद्यार्थी अपनी शिक्षा प्राथमिक स्कूलों में लेते हैं, जिसमें वे छठे से चौदहवें वर्ष तक जाते हैं। फिर एक नियम के अनुसार उन्हें व्यावसायिक ट्रेनिंग के लिए स्कूल में जाना होता है। इस अवधि में ऐसे स्कूल में तीन वर्ष की ट्रेनिंग अनिवार्य है। पिछड़े हुए बच्चों के लिए कारण चाहे शारीरिक हो, अथवा मानसिक, विशेष स्कूलों की व्यवस्था है।

प्राथमिक स्कूल के प्रथम चार वर्षों तक बच्चों को अनिवार्य रूप से हाज़िरी देनी होती है। उसके पश्चात् उन्हें इन्टरमीजिएट अथवा हाई स्कूल में जाने की छूट है। सामान्यतया इन्टरमीजिएट में छः कक्षाएँ होती हैं और उन्हें उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् प्रशासन अथवा वाणिज्य के कार्य का मार्ग खुल जाता है। यह भी होता है कि व्यवसायिक कोर्स पूरा करने के बाद स्पेशलाइज़्ड (Specialised Schools) स्कूल विशेष प्रकार के लिए मार्ग खुल जाए। नार्मल वोकेशनल पार्ट टाइम स्कूलों (Normal Vocational Part time Schools) के अलावा वाणिज्य, सामाजिक अथवा कला-सम्बन्धी पूरे समय के प्रोफेशनल स्कूल्स (Professional Schools) भी होते हैं।

हाई स्कूल में जिसे जिम्नाशियम (Gymnasium) कहा जाता

है, ९ वर्षों के पश्चात् एक परीक्षा पूर्ण हो जाती है जिसके पश्चात् विश्वविद्यालय के दरवाज़े खुल जाते हैं।

विनोद ने यहाँ से रवाना होते समय उन दोनों को भारत आने का न्यौता दिया। जर्मन स्कूलों तथा वहाँ की शिक्षा-प्रणाली के बारे में इतनी जानकारी पा लेने पर विनोद को सन्तोष का अनुभव हुआ।

१३

कर्मठ लोगों के देश आख़री सलाम

म्युनिक से दोनों ने कार द्वारा दक्षिण का सफ़र जारी रखा। अब उन्हें मैदान न दिख कर पहाड़ ही पहाड़ दिखलाई दे रहे थे। इन्हें पहाड़ न कह कर पहाड़ियाँ ही कहना ठीक होगा, क्योंकि उनकी ऊँचाई बहुत कम थी। चाचाजी ने बताया कि इन पहाड़ियों में ही आगे चलकर आल्प्स पर्वत मिलता है।

"किन्तु आल्प्स पर्वत तो स्विट्ज़रलैण्ड में है न? हम तो अभी जर्मनी में ही हैं।"

"हाँ, आल्प्स पर्वत का बहुत बड़ा और ऊँचा भाग स्विट्ज़रलैण्ड में है। इसी कारण आल्प्स का नाम लेते ही स्विट्ज़रलैण्ड की याद आ जाती है। आल्प्स पर्वत के कुछ भाग जर्मनी और कुछ फ्रांस, आस्ट्रिया और इटली में भी हैं।"

"यह बात है तब तो हम लोग अब स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा से बहुत दूर नहीं होंगे?"

"हाँ, हम बर्शटेसगाडेन (Berchtesgaden) नगर के क़रीब हैं

जो दक्षिण में जर्मनी का आख़िरी नगर है। आस्ट्रिया की सीमा इसके बिल्कुल क़रीब है।"

रास्ते में उन्हें प्रकृति की अद्भुत छटा के दर्शन हुए। मनोरम घाटियाँ दिखाई पड़ी। चाचाजी ने बताया की ठंड के मौसम में यहाँ सब जगह बर्फ़ छा जाती है और तब यहाँ बर्फ़ पर खेले जाने वाले खेल खेलने में बड़ा आनन्द आता है।

"लेकिन ठंड के मौसम में लोग बर्फ़ पर खेल कैसे खेल लेते हैं?"

"यह तो आदत की बात है। हमारे ही देश में भी शिमला, काश्मीर और कुल्हू के पहाड़ों पर लोग सब जगह बर्फ़ छा जाने पर कई तरह के खेल खेलते ही हैं।"

अब वे लोग बर्शटेसगाडेन पहुँच गये थे। इस पर्वतीय नगर के आसपास मनोरम झीलें होने के कारण इसकी सुन्दरता और भी बढ़ गई है। चाचाजी ने बतलाया कि हिटलर को यह जगह बहुत पसन्द थी। ग्रीष्मऋतु में कुछ दिन वह यहीं बिताया करता था। नगर आधुनिक सुख-सुविधाओं से पूर्ण था और टूरिस्टों के लिए यहाँ कई तरह के आकर्षण थे। बादेन-बादेन के बाद उन लोगों ने इतने अधिक टूरिस्ट इसी नगर में देखे थे।

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उनके जर्मनी से स्विट्ज़रलैण्ड जाने का दिन क़रीब आ गया था। अतएव बहुत इच्छा होते हुए भी दोनों यहाँ एक दिन से ज्यादा न ठहर सके। कार में वे पश्चिम दिशा में लिन्डाव (Lindau) की ओर चल दिये। रास्ते में उन्हें गर्मिश पारटेनकिरशेन (Garmisch Partenkirchen) नगर मिला

और भी कई छोटे-छोटे सुन्दर गाँव दिखलाई दिये। यहाँ पर शरत्-ऋतु में वर्ष में खेले जानेवाले सभी खेल खेलने की सुविधाएँ यात्रियों को मिलती हैं। १९३६ में यहाँ पर विश्व के ओलिम्पिक खेलों की प्रतियोगिता हुई थी। रास्ते में सुन्दर दृश्यों को देखते हुए वे लिन्डाव पहुँचे। यह सुन्दर नगर यूरोप की सबसे बड़ी झील कान्स्टेन्स (Constance) के किनारे बसा हुआ है। टूरिस्टों के लिए तो यह स्वर्ग के समान है। यहाँ एक सुन्दर टाउन हाल भी है।

इस नगर में साल के सभी महीनों में संगीत, और नृत्य के कार्यक्रम चलते ही रहते हैं। कान्स्टेन्स झील ४६½ मील लम्बी और २०५ वर्गमील में फैली हुई है। राइन नदी इसी में से होकर निकलती है। इसी क्षेत्र के पास स्विट्ज़रलैण्ड और आस्ट्रिया की सीमाएँ आकर जर्मनी की सीमा से मिलती हैं। यहाँ का वह गेट, जिसमें से होकर जहाज़ और स्टीमर झील में प्रवेश करते हैं, लायन्स आफ लिन्डाव (Lions of Lindau) के नाम से प्रसिद्ध है। चाचाजी ने बतलाया कि ये दो सिंह यात्रियों के स्वागत के प्रतीक हैं।

यहाँ उसे कुछ लोगों को कार सहित स्टीमर में घुसते देख कर अचरज हुआ। चाचाजी ने बताया कि यहाँ कारें मुसाफिरों सहित स्टीमर में लाद कर उस पार पहुँचा दी जाती हैं।

अब तक विनोद और उसके चाचाजी ने अधिकांश सफर कार से ही तय किया था। अब उन्हें स्टीमर द्वारा अपनी जर्मनी की यात्रा

के आख़िरी नगर तक जाने का मौक़ा मिला। यह नगर था कान्स्टेन्ज़ (Konstanz) जिसके कुछ भाग स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में पड़ते हैं। स्टीमर की यात्रा बड़ी सुखप्रद लगी। स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा पर होने के कारण इस नगर में जर्मन लोगों के साथ साथ स्विस भी अधिक संख्या में दिखलाई पड़ रहे थे। यद्यपि दोनों की पोशाक में विशेष फ़र्क़ न था, किन्तु उनकी अलग-अलग बोलियों के कारण विनोद को उन्हें पहचानने में कठिनाई न हुई। अब तक वह जर्मन भाषा के कुछ शब्द भी सीख गया था और इतना तो जान ही लेता था कि जो भाषा बोली जा रही है वह जर्मन है या नहीं।

कान्स्टेन्ज़ में दो दिन ठहर कर भली-भांति आराम कर लेने के बाद दोनों ने अपनी जर्मन-यात्रा के आख़िरी नगर से विदा ली। विदा लेते समय यह स्वाभाविक ही था कि विनोद की आंखों के सामने से एक महीने की जर्मन-यात्रा की तस्वीर चित्रपट की तरह गुज़र जाती। इस बीच उसने तरह-तरह के अनुभव किए; सब मिला कर यह यात्रा मनोरंजक होने के साथ साथ ज्ञानवर्द्धक रही। नगर छोड़ कर स्विट्ज़रलैण्ड की सीमा में प्रवेश करते समय उसने इस देश के कर्मठ लोगों को मन ही मन प्रणाम किया जिन्होंने दूसरी बड़ी लड़ाई में खंडहर बना दिए गये नगरों को न केवल बहुत थोड़े समय में फिर से खड़ा कर दिया बल्कि उन्हें आधुनिकतम रूप दे दिया। काश हमारे देश के लोग भी देश का निर्माण करने में इसी उत्साह और परिश्रम से काम लेते! तब तो पंचवर्षीय

योजनाएँ हमारे देश की काया ही पलट देतीं, उसने सोचा। और कुछ न सही तो कम से कम वह तो अपने देश का निर्माण करने में जर्मनों की ही भांति उत्साह और परिश्रम से काम लेगा, ऐसा सोचते हुए उसने एक बार फिर कर्मठ लोगों के देश जर्मनी को मन ही मन प्रणाम किया।